प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री ओमप्रकाश बघेल एम.फिल. अर्थशास्त्र अध्ययनशाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.) के द्वारा एम.फिल. अर्थशास्त्र की उपाधि सन् 2012–13 की आंशिक पूर्ति हेतु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है जिसका शीर्षक है:– ग्रामीण छत्तीसगढ़ में उपभोग का बदलता स्वरूप एवं सामजिक आर्थिक दाशाएं (बलौदाबाजार जिले के विशेष संदर्भ में)

यह कार्य मेरे मार्गदर्शन में पूर्ण किया गया यह लघु शोध प्रबंध इनकी मौलिक एवं स्तरीय कृति है, मै इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूॅं।

स्थान –

दिनांक –

निर्देशक

डॉ.आर.प्रसाद

प्रध्यापक / विभागाध्यक्ष ा

अर्थशास्त्र अध्ययनशााला

पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छ.ग.

घोषणा–पत्र

मै ओमप्रकाश बघेल यह घोषणा करता हूॅं कि ग्रामीण छत्तीसगढ़ में उपभोग का बदलता स्वरूप एवं सामजिक आर्थिक दशाएं बलौदा बाजार जिले में विशेष संदर्भ में हेतु प्रस्तुत यह लघु शोध प्रबंध स्वयं के प्रयास का प्रतिफल है, जिसे मैने डॉ. आर. प्रसाद. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र अध्ययन शाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के निर्देशन में पूरा कर सका हूॅं जो अनुमोदित विषय सूची के अनुरूप है।

रायपुर

ओमप्रकाश बघेल

एम.फिल. अर्थशास्त्र

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

रायपुर

आभार–प्रद□ान

मनुष्य जब किसी अभिनव पथ की ओर कदम रखता है तब वह उत्साह, प्रेरणा, सहयोग और मार्गदर्शन की आवश्यकता का अनुभव करता है। सही मार्ग दर्शन से ही वह अपने निश्चित उद्देश्य को क्रियान्वित कर सफलता की चरणों को चूम लेती है।

प्रस्तुत शोधकार्य के प्रस्तुतीकरण के लेखक सर्वप्रथम निर्देशक के रूप में आदरणीय गुरूवर डॉ. आर.प्रसाद. (प्रध्यापक/ विभागाध्यक्ष) अर्थशास्त्र के प्रति श्रद्धावनत है, जिन्होंने शोधकाल में सदैव उत्साहवर्द्धन किया और उचित मार्गदर्शन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पूज्य पिताजी वंदनीय माताजी, पूज्य बड़ाभाई, वंदनीय भाभी जी के असीम स्नेह से मुझे निरंतर अध्ययनकाल में त्याग और प्रेरणा से पल्लवित किया जो मेरे जीवनकाल को समृद्ध करने के लिए एक अवसर था, जिसे मै नही भूलापाऊंगा और सदा ऋणी रहूंगा।

आदरणीय गुरूवर डॉ.अमरकांत पाण्डेय (प्राध्यापक), डॉ.रविन्द्र ब्रम्हें (प्राध्यापक), डॉ.बी.एल.सोनेकर सहायक प्राध्यापक. डॉ. अर्चना शेट्टी (सहायक प्राध्यापक), डॉ. सुनील कुमेटी (सहायक प्राध्यापक) के आशीर्वाद एवं सहयोग का मै अभारी रहूंगा।

मौसम विभाग केन्द्र बलौदाबाजार, तहसील कार्यलय कृषि अनुविभाग, शासकीय चिकित्सालय बलौदाबाजार, सांख्यिकीय कार्यालय बलौदाबाजार व समस्त तहसील के विभिन्न शासकीय, कर्मचारियों ने यथा योग्य सामाग्री उपलब्ध करायी तथा लघुशोध प्रबंध रचना में अनेक विद्वानों के कृतियों का उपयोग किया गया है तथा उसका संदर्भ प्रस्तुत किया गया है, उन सभी विद्वानों के प्रति सहृदय से अभारी हूँ।

प्रिय मित्र घासीराम टण्डन, किरण साहू, उपेन्द्र साहू, विनित साहू, निलाम्बर पटेल, जितेन्द्र पटेल, उद्धव पटेल, ममता वर्मा, रजनी वर्मा, गीता फहार, गीता नागवंषी, प्रवीण चन्द्राकर, जितेन्द्र वर्मा, वंदना विश्वकर्मा, जोहन सोनवानी, विद्यासागर, सरोज दानी, राकेश कुर्रे, रविन्द्र धृतलहरे, धर्मेन्द सोनवानी, मीना कुर्रे, तृप्ति वर्मा, लीमा तिर्की, प्रगति कृष्णन, चांदनी शुक्ला जो रचनात्मक सहयोग सामग्री संकलन हेतु सहयोग दिया वो अविस्मरणीय है, उनकी कृतित्व के लिए मै सदा आभारी हूँ।

अंत में उन सभी को धन्यवाद जिन्होंने किसी भी रूप में लघुशोध के प्रकाश में अपना प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया ।

रायपुर—

प्रस्तुतकर्ता

ओमप्रकाश बघेल अर्थशास्त्र

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

रायपुर (छ.ग.)

विषय सूची

प्रथम अध्याय– **पृ.क. 9–15**

1.1 अध्ययन विषय की प्रस्तावना

1.2 विषय का चुनाव

1.3 शोध का उद्देश्य

1.4 शोध परिकल्पनाएं

1.5 शोध प्रविधि

1.6 आंकड़ो का संग्रहण

1.7 शोध प्रस्तुतीकरण

द्वितीय अध्याय– **पृ.क.**

;16–21

2.1 विषय से सम्बन्धित शोध साहित्य की समीक्षा

तृतीय अध्याय– भौगोलिक पृष्ठभूमि **पृ.क. ;22–50**

3.1 अध्ययन का क्षेत्र का सामान्य परिचय

3.2 स्थिति विस्तार

3.3 भूवैज्ञानिक संरचना एवं उच्चावच

3.4 अपवाह तंत्र

3.5 जलवायु, तापमान, वर्षा

3.6 मिट्टी

3.7 वनस्पति, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि

3.8 जनसंख्या का वितरण

3.9 लिंगानुपात

3.10 आयु संरचना

3.11 साक्षरता

3.12 व्यवसायिक संरचना

3.13 पषुधन

3.14 परिवहन

चतुर्थ अध्याय– **पृ.क.**

51–65

4.1 <u>उपभोग प्रवृत्ति पर पारिवारिक बजट का बदलता स्वरूप का प्रभाव</u>

4.2 उपभोग प्रवृत्ति पर ग्रामीण पारिवारिक बजट एवं आधुनिकीकरण का प्रभाव

4.3 पूर्व उपयोग प्रवृत्ति एवं वर्तमान उपभोग प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

4.1 कृषिगत खाद्य पदार्थो के उपभोग व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.2 वस्त्र के उपभोग पर व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.3 जीवन स्तर के सहायक उपकरणों पर व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.4 साबुन डिटर्जेन्ट के उपभोग व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.5 मादक पदार्थो के उपभोग व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.6 आवागमन के साधनों के उपभोग व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.7 मनोरंजन के साधनों के उपभोग व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.8 अन्य उपभोगगत वस्तुओं के उपभोग प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

4.9 विघुत चलित उपकरण के उपभोग प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

4.10 ऊर्जा के उपभोग पर व्यय के तुलनात्मक अध्ययन

4.11 घरेलू उपभोगगत वस्तुओं के उपभोग प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

पंचम अध्याय– **पृ.क.**

;66.68द्ध

5.1 उपभोग प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक

5.2 बदलते उपभोग प्रवृत्ति का विष्लेषण

छठंवा अध्याय– **पृ.क.**

;69.74द्ध

6.1 निष्कर्ष, समस्या एवं सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची अनुसूची

प्रथम अध्याय

भीर्षकः– ग्रामीण छत्तीसगढ में उपभोग का बदलता स्वरूप एवं समाजिक आर्थिक द�ााए

1.1 प्रस्तावना

देश की राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के साथ–साथ उपभोग प्रवृत्ति में भी वृद्धि हुई है। उपभोग प्रवृत्ति आय का फलन होती है, परन्तु निम्न आय वर्ग वाले लोगों की सीमांत उपभोग प्रवृत्ति उच्च आय वर्ग वाले लोगों की सीमांत उपभोग प्रवृत्ति से अधिक होती है। वर्तमान में समाज की उपभोग प्रवृत्ति में परिवर्तन हुआ है। शहरों के साथ ग्रामीण क्षेत्रों की उपभोग प्रवृत्ति में भी वृद्धि हुई है।

स्वतंत्रता प्राप्ती के पश्चात् से ही भारत सरकार ने जनकल्याणकारी योजनाओं की शुरूआत की तथा सन् 1950 में भारत ने देश की उपभोग प्रवृत्ति के संबंध जानकारी एकत्रित करने के उद्देश्य से कार्य करना प्रारम्भ किया तथा राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (छैै) का गठन किया गया। एन. एस. एस. ओ. विभिन्न्न वर्गों द्वारा किये जाने वाले उपभोग व्यय के संबंध में सांख्यिकीय जानकारी एकत्रित करती है। यह जानकारी नीति निर्माण एवं निम्न आय समूह के लिए कल्याणकारी योजनाओं के निर्माण में सहायक होती है। और साथ ही गरीबी और असमानताओं के संबंध में भी आंकडे एकत्रित करती है।

आज समुचा विष्व एक वैष्विक गांव का आकार ले चुका हैं। जिसमें प्रमुख योगदान संचार क्रांति, वैशवीकरण, उदारीकरण एंव निजीकरण की प्रकिया है जिसका प्रभाव भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की बदलती उपभोग प्रवृत्ति है। देष के दुरस्थ ग्रामीण एंव वनांचल क्षेत्रों में टी.वी. दूरदर्षन के विस्तार संचार साधनों एवं परिवहन के साधनों का विस्तार होने से आधुनिक उत्पादों कि पहुंच इन क्षेत्रों में आसानी से हो रही है साथ ही ग्रामीण परिवारों की आय में वृद्धि भी उपभोग की प्रवृत्ति को बदलने में सहायक रही है। इन ग्रामीण परिवारों में उपभोग का स्वरूप परिवर्तित होने से परिवार की बुनियादी आवशयकताओं वाले उत्पादों की उपभोग में तेजी से कमी आई है।

गावों में षिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पषुपालन, मछलीपालन, रोजगार संबंधी अद्यतन जानकारियों की सहज पहुंच हो गयी है। हरित क्रांति एंव ष्वेत क्रांति एवं लैब टू लैण्ड ; प्रयोगषाला से खेत तकद्ध तकनीक के हस्तांतरण से किसानों को उनके कृषि उत्पाद सब्जी, फल, दाल, तिलहन, हरे चारे आदि के विक्रय एंव विपणन में सुविधा हो गई है। इससे एक ओर ग्रामीण परिवारों को प्रत्यक्ष

रोजगार और आय बढाने का अवसर मिला है वही दूसरी ओर उनके उपभोग की प्रवृत्ति में भी व्यापक बदलाव परिलक्षित हो रहे है।

देष में शाहरी व ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में कुल उपभोक्ता व्यय की संरचना में हो रहा परिवर्तन एंजिल के नियम के अनुकुल ही है एंजिल के प्रसिद्ध नियम के अनुसार आय में वृद्धि के साथ–साथ कुल उपभोग व्यय में भोजन पर किये जाने वाले व्यय का प्रतिषत घटता है। उपरोक्त कारणों से देशा के ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक एंव खाद्यान्न वस्तुओं की उपभोग मात्रा का प्रतिशात पहले से कम हुआ है।

2004–05 के सर्वेक्षण के आधार पर एन.एस.एस.ओ. की इस रिपोर्ट में बताया है कि तुलना में शाहरी क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति उपभोग व्यय जहां 1052.36 रूपए प्रतिमाह आकलित किया गया है वही ग्रामीण क्षेत्रों में यह 558.78 रूपए बताया गया है। कुछ अपवादों को छोड़कर इस सर्वेक्षण में अनुसूचित जाति व जनजातियों के लोगों में व्यय का स्तर जहां अन्य पिछड़े वर्गों से कम पाया है वही अन्य पिछड़े वर्गों में यह अन्य लोगों से कम पाया गया है। रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जनजाति के लोगों का अखिल भारतीय स्तर पर औसत मासिक उपभोग व्यय सबसे कम 426.19 रूपए ही पाया गया है। इससे बेहतर स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जाति के लोगों दर्ज की जिनका प्रतिव्यक्ति मासिक उपभोग व्यय 474.72 रूपए दर्ज किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य लोगों के मामलों में यह 685.31 रूपए प्रतिव्यक्ति मासिक उपभोग व्यय दर्ज किया गया व अन्य पिछड़े वर्गों में औसत प्रतिव्यक्ति मासिक उपभोग व्यय 556.72 रूपए दर्ज किया गया है।

इस प्रकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार ग्रामीण पारिवारिक बजट को और ज्यादा प्रभावित कर सकता है तथा ग्रामीण परिवेशा और बदलाव ला सकता है। अतः सरकार को शिक्षा साक्षरता क्षमता निर्माण आदि प्रक्रियाओं पर जोर देना होगा जिससे पारिवारिक बजट से हमें एक परिवार की पारिवारिक संरचना सदस्यों की आय आर्थिक स्थिति परिवार की प्राथमिकताएं जीवन स्तर अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन लक्ष्य बचत प्रवृत्ति आदि के संबंध में कई महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है।

उपभोक्ता ऊर्जा क्षेत्रों में भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं है। आज घर के आधे से अधिक उपकरण बिजली से परिचालित हो रहे है। ऊर्जा के पारम्परिक एवं अपारम्परिक स्त्रोत का उपभोग निरंतर बढ़ता जा रहा है। परिणामस्वरूप ऊर्जा संरक्षण एवं उसका विवेकपूर्ण उपभोग अत्यावशयक हो गया है। ऊर्जा के पारम्परिक स्त्रोत कोयला, पानी, खनिज तेल आदि के साथ–साथ ऊर्जा के अपारम्परिक स्त्रोत सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, भूतापीय ऊर्जा महासागर ऊर्जा, लघुपनबिजली योजना, बायोगैस आदि का उपभोग निरंतर बढ़ता जा रहा है।

"2025 तक भारत वि□व का पांचवा बड़ा उपभोक्ता बाजार"

भारतीय अर्थव्यवस्था में विकास की मौजूदा प्रवृत्ति बने रहने पर 2025 तक भारत विष्व का पांचवा बड़ा उपभोक्ता बाजार हो जायेगा। निजी क्षेत्र की अनुसंधान कम्पनी द्वारा "बर्ड ऑफ गोल्ड द राइज ऑफ इंडियाज कंज्यूमर मार्केट" र्शीषक से जारी इस रिर्पोट के अनुसार वर्तमान में भारत विष्व का 12वॉ बड़ा बाजार उपभोक्ता बाजार है। रिर्पोट में बताया गया है कि 2025ई. तक भारत में मध्यम आय वर्ग के लोगों कि संख्या निर्धनता रेखा के नीचे की जनसंख्या से अधिक होगी। रिर्पोट

में 2025 तक देष में मध्यम आय वर्ग की जनसंख्या 5करोड़ के मौजुदा स्तर का लगभग 12गुणा होकर 58.3करोड़ होने की संभावना व्यक्त की गई है, जो उस समय की कुल जनसंख्या का 41 प्रतिषत होगी। रिर्पोट के अनुसार आने वाले दो दषकों में घरेलु आय तीन गुणा हो जायेगी तथा 29करोड़ जनसंख्या निर्धनता रेखा को पार कर इसके ऊपर निकल जाएगी। वर्तमान ग्रामीण परिवेष तेजी से प्रभावित हो रहा है और देष की उपभोग प्रवृत्ति में हो रही वृद्धि में ग्रामीण उपभोक्ताओं के योगदान में भी वृद्धि हुई है। जिससे उनके पारिवारिक बजट की रूपरेखा भी परिवर्तित हो रही है। यह आधुनिकीकरण का प्रभाव है कि आज देष के कृषक कृषि की नवीन एवं उन्नत तकनीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं। देष के खाद्यान्न उत्पादन में रिकार्ड तोड़ वृद्वि भी उन्नत एवं आधुनिक तकनीकों के उपयोग का परिणाम है।

वास्तव में आज ग्रामीण जीवन की तस्वीर बदल रही है। दूरसंचार सेवाओं का भी विकास हो रहा है, मोबाइल सेवाओं का उपयोग भी ग्रामीण जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। आज देष के दूर–दराज के छोटे–छोटे गॉवों में भी मोबाइल टावर देखने को मिल जाता है, दूरसंचार सेवाओं का भी तेजी से विस्तार हो रहा है। ब्रॉडबैंड, टेली मेडिसिन, कम्प्यूटर आदि।

आधुनिकीकरण से ग्रमीण जीवन की उपभोग प्रवृत्ति में और भी अनेक परिवर्तन हुए हैं। एक कार कम्पनी सर्वेक्षण के अनुसार उसके उपभोक्ताओं में 34प्रतिषत ग्रामीण उपभोक्ता है। वही हीरो होण्डा बाइक के सर्वेक्षण के अनुसार प्रतिवर्ष उनके उपभोक्ताओं में ग्रामीणों की संख्या बढ़ती जा रही है। ग्रामीण रहन–सहन एवं जीवनसार तेजी से बदल रहा है। आज गांवो में बैकिंग सुविधाओं का तेजी से विकास हो रहा है और ग्रामीण ई–बैकिंग एवं ए.टी.एम. जैसी सुविधाओं का भी उपभोग करने लगे हैं। अतः सरकार को षिक्षा, साक्षरता, क्षमता निर्माण आदि प्रक्रियाओं पर जोर देना होगा जिससे उनके जीवन स्तर, रहन–सहन, खान–पान में सुधार आ सके और देष के आर्थिक विकास में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

ग्रामीणों की बदलती उपभोग प्रवृत्ति में सरकार की नीतियां भी बहुत महत्वपूर्ण है। गॉव के अधिकांष लोग अपनी आजीविका कृषि या हस्तषिल्प से अर्जित करते हैं चूंकि हर परिवार के पास उपलब्ध भूमि स्थिर रहा है और उसके सदस्यों की संख्या में लगातार वृद्वि होती रही है जिनसे उसकी उपभोग प्रवृत्ति बदलती रही है लेकिन उतना ही भूमि से सभी का भरण–पोषण कर पाना एक मुष्किल काम है। सरकार इन समस्याओं को दूर करने के लिए नई कृषि तकनीकों के प्रयोग द्वारा उसी भूमि से उत्पादन की मात्रा बढ़ाने के साथ–साथ गांवो के भीतर या समीप में रोजगार और जीविकोपार्जन के अन्य अवसर उपलब्ध कराने के प्रयास कर रही है। युवाओं को प्रशिाक्षण प्रदान कर और वितीय सहायता के द्वारा स्वंय का व्यवसाय शुारू करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे ग्रामीणों के आय स्तर में वृद्वि हो रही है और उनके आय के साथ आवशयकताओं के स्तर भी बढ़ रही है जिससे ग्रामीणों के उपभोग में वृद्धि हो रही है, जो कि देष के राष्ट्रीय आय, प्रतिव्यक्ति आय एंव आर्थिक विकास में वृद्धि कर रही हैं। अतः उपभोग ही विकास की जननी है।

1.2 अध्ययन का उद्दे�य

ग्रामीण जनसंख्या में हो रही वृद्धि के कारण उनकें उपयोग प्रवृत्ति में वृद्धि हो रही है और इसके सामाजिक आर्थिक कई निर्हितार्थ भी है किन्तु बढ़ती उपयोग प्रवृत्ति एक गंभीर समस्या है क्यों कि उपभोग में वृद्धि होने से वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि, कृषि खाद्यान्न पर बढ़ता दबाव, प्राकृतिक संसाधनों अविवेकपूर्ण उपयोग होता है किन्तु .... गंभीर समस्या का गहन अध्ययन अभी तक नहीं

हो सकता है अतः यह आवश्यक है कि इसके कारणों का अध्ययन किया जाए एवं इस समस्या के समाधान हेतु उपाय ढूंढे जाए, इन्हीं तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध कार्य का चयन किया गया है, इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है :–

1.ग्रामीण क्षेत्रों की उपभोग प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।

2.ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोग सम्बन्धी परिवर्तनों का अध्ययन करना।

3.ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोग सम्बन्धी समस्याओं का पता लगाना एवं निवारण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

1.3 शोध परिकल्पनाएं

1. उपभोग तथा बचत में वृद्धि आय में वृद्धि का फलन होती है।
2. आय वृद्धि के साथ–साथ उपभोग की मात्रा में भी वृद्धि होती है परन्तु आय में वृद्धि की तुलना में उपभोग में वृद्धि दर कम होती है।
3. ग्रामीण क्षेत्रों की उपभोग प्रवृत्ति में तीव्र परिवर्तन हो रहा है। उच्च आय प्राप्त करने वाले ग्रामीण उपभोक्ता तकनीक साधनों एवं विलासिता की वस्तुओं का अधिक उपभोग करते हैं

1.4 शोध– प्रविधि

प्रस्तावित अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक समंकों पर आधारित होगा। द्वितीयक समंकों का संकलन राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण सगंठन रिपोर्ट एवं शासकीय एवं अर्द्ध शासकीय प्रतिवेदनों से किया जाएगा है। विभिन्न प्रतिवेदन एवं रिपोर्ट से प्राप्त समंकों का विश्लेषण प्रतिशत विधि एवं सांख्यिकीय विधियों से किया जाएगा। साथ ही अध्ययन को विश्वसनीय एवं व्यावहारिक बनाने के लिए आवश्यकतानुसार रेखाचित्रों का भी उपयोग किया जाएगा

1.5 अध्ययन– क्षेत्र

ग्रामीण क्षेत्र में शीघ्र बदलती उपभोग प्रवृत्ति एक ज्वलंत समस्या है, खरीब फसल के पश्चात् प्रतिवर्ष ग्रामीण जनसंख्या का .....प्रवास होता है यह उत्प्रवास इतनी अधिक मात्रा में होती है की उपभोग स्तर में भी वृद्धि होती है। बलौदा बाजार एक पृथक जिला बन चुका है।

प्रस्तुत अध्ययन में बलौदाबाजार जिले के पलारी विकासखण्ड के एक गाँव का चुनाव किया गया है।

1.6 भोध विशय का चयन

विषय चयन ग्रामीण उपभोग स्तर एवं समस्याओं को ध्यान में रखकर किया गया है। आज सभी क्षेत्र में उपभोग प्रवृत्ति में परिवर्तन हो रहा है। ग्रामीण क्षेत्र में उपभोग का स्तर कैसा है ? क्या

नवीन संसाधन का उपयोग कर रहे हैं ? उपभोग प्रवृत्ति में परिवर्तन का कारण क्या है ? यही जानने के लिए बलौदाबाजार जिले के पलारी विकासखंड का एक गाँव की बदलती उपभोग प्रवृत्ति का सर्वेक्षण कि

1.7 भाोध प्रस्तुतीकरण

प्रथम अध्याय–

1.8 अध्ययन विषय की प्रस्तावना

1.9 विषय का चुनाव

1.10 शोध का उद्देश्य

1.11 शोध परिकल्पनाएं

1.12 शोध प्रविधि

1.13 आंकड़ो का संग्रहण

1.14 शोध प्रस्तुतीकरण

द्वितीय अध्याय–

2.1 विषय से सम्बन्धित शोध साहित्य की समीक्षा

तृतीय अध्याय– भौगोलिक पृष्ठभूमि एवं सामाजिक–आर्थिक परिचय

3.1 अध्ययन का क्षेत्र का समान्य परिचय

3.2 स्थिति विस्तार

3.3 भूवैज्ञानिक संरचना एवं उच्चावच

3.4 अपवाह तंत्र

3.5 जलवायु, तापमान, वर्षा

3.6 मिट्टी

3.7 वनस्पति, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि

3.8 जनसंख्या का वितरण

3.9 लिंगानुपात

3.10 आयु संरचना

3.11 साक्षरता

3.12 व्यवसायिक संरचना

3.13 पषुधन

3.14 परिवहन

चतुर्थ अध्याय– प्रभाव

4.1 उपभोग प्रवृत्ति पर ग्रामीण पारिवारिक बजट एवं आधुनिकीकरण का प्रभाव

4.2 उपभोग प्रवृत्ति पर पारिवारिक बजट का बदलता स्वरूप का

4.3 ग्रामीणों की पूर्व उपभोग प्रवृत्ति एवं वर्तमान उपभोग प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

4.1 कृषिगत खाद्य पदार्थो के उपभोग व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.2 वस्त्र के उपभोग पर व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.3 जीवन स्तर के सहायक उपकरणों पर व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.4 साबुन डिटर्जेन्ट के उपभोग व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.5 मादक पदार्थो के उपभोग व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.6 आवागमन के साधनों के उपभोग व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.7 मनोरंजन के साधनों के उपभोग व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

4.8 अन्य उपभोगगत वस्तुओं के उपभोग प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

4.9 विघुत चलित उपकरण के उपभोग प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

4.10 ऊर्जा के उपभोग पर व्यय के तुलनात्मक अध्ययन

4.11 घरेलू उपभोगगत वस्तुओं के उपभोग प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

पंचम अध्याय–

5.1 उपभोग प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक

5.2 बदलते उपभोग प्रवृत्ति का विष्लेषण

छठंवा अध्याय–

6.1 निष्कर्ष, समस्या एवं सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

अनुसूची

अध्याय–2

साहित्य का पुनरीक्षण

आयोग योजना (1951)[1] ने प्रथम पंचवर्षीय योजना में यह प्रावधान रखा कि ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए कृषि विकास को बढावा दिया जाए । जिससे खाद्यान्न वस्तुओं की पूर्ति में वृध्दि हो सके, तथा ग्रामीणों के उपभोग प्रवृत्त में वृध्दि हो सके।

गाड़गिल डी.आर. (1951)[2]ने अपने शोध में यह सुझाव दिया है कि क्षेत्रीय विकास संतुलन के लिये क्षेत्रों में लघु उद्योग खोलकर बेरोजगारों को काम दिया जाना चाहिए। इससे ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्रों की आय में जहाँ वृद्धि होगी वहीं क्षेत्रीय असमानताओं में कमी आयेगी और उनके उपभोग को सार में सुधार होगा।

ओझा पुण्यदेव (1956)[3] औद्योगीकरण की कार्य नीति में लघु क्षेत्र की एक केन्द्रीय भूमिका है। कमँजी निवेश से उत्पादक रोजगार के अवसर बढ़ाने की इसकी अच्छी क्षमता है और इसका लचीला प्रबंध तंत्र विभिन्न प्रकार के उपभोक्ताओं की विशिष्ट आवश्यकताओं के उपयुक्त उत्पादों के निर्माण के लिये आधुनिक प्रौद्योगिकी और नए विचार अपनानें में सक्षम है । वस्तु के आकार प्रकार के प्रति उपभोक्ता की रूचि में बहुत भिन्नता होती है और यह बहुत शीघ्र बदलती है। लघु उद्योग क्षेत्र इन परिवर्तनशील आवश्यकताओं को सुविधापूर्ण और शीघ्र पूरा करने में सक्षम है।

मिश्रा ओ.पी., सहाय एस.के., पाण्डे यू.के. ने अपने सम्मिलित अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि लघु उद्योगों को वित्तीय सहायता प्राप्त करना ग्रामीण गरीबों के लिये आर्थिक रूप से उपयुक्त कार्यक्रम है क्योंकि लघु उद्योगों के विकास के माध्यम से निम्न आय वर्ग कोरोजगार प्रदान कर गरीबी रेखा के ऊपर लाया जा सकता है, जिससे उनकी जीवन स्तर एवं उपभोग प्रवृत्ति में परिवर्तन होगा।

भगवाानदास रेड्डी बी (1988)[5] ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण क्षेत्रों में लघु एवं कुटीर उधोगों का विकास किया जाय। जिससे इन उधागों से निर्मित वस्तएं ग्रामीण

उपभोक्ता बाजार में उपलब्ध हो जिससे श्रमिकों को इसका लाभ प्राप्त होगा एवं इनके जीवन स्तर में सुधार होगा।

भाौली मजुमदार (1998)[8] ने "रायपुर जिले में ग्रामीण क्षेत्र का उपभोग प्रतिरूप" नामक विषय का अध्ययन कर बताया कि निम्न आय वर्ग वाले परिवारों में उपभोग प्रवृत्ति अधिक है और उच्च आय वर्ग वाले बचत प्रवृत्ति अधिक है। निम्न और मध्यम आय वर्ग के परिवारों में सदस्यों की संख्या अधिक होने से खाद्य पदार्थों की खपत अधिक मात्रा में होती है। उच्च आय वर्ग और उच्चतम आय वर्ग में औद्योगिक उत्पादन और ऊर्जा उपभोग अधिक मात्रा में होती है।

पटेल कुमार सुधीा (2009)[6] ने ''पंचायती राज में रोजगार का बदलता स्वरूप '' र्शीषक का अध्ययन कर बताया कि ग्राम पंचायतों लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास को बढावा देने के लिए विषय विशेषज्ञों की सलाह लेकर कार्य करे । ग्रामीण रोजगार का प्रमुख आधार कृषि के साथ पशुपालन की सहायक कार्य के रूप में किया जासकता है। जिससे रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। तथा कृषकों की पलायन की प्रवित्त में होगी जिससे उपभोग में वृध्दि होगी और ग्रामीणों के जीवन स्तर में सुधार होगा उपरोक्त उद्‌देश्य पूर्ति हेतु सहकारी समितियों एवं स्व सहायता समूह मददगार साबित हो सकते है। प्राप्ति से लोगों की बचत प्रवित्त एवं पूँजी निर्माण में वृध्दि हो होगी।

गांधी हेमा (2009)[7] ने ''हस्तशिल्प कला से रोजगार '' नामक विषय का अध्ययन कर बताया कि राष्ट्रीयकृत बैंक और जिला उधोग केन्द्रस्वरोजगार योजना के अंतर्गत हस्तशिल्प प्रशिक्षण संस्थान के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करते है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाालें परिवारों के जीवन स्तर में सुधार हेतु राज्य सरकार द्वारा 1 करोड रूपये प्रति जिले को अनुदान देती है। 12 राज्यों में कार्यरत ऐसे 20 संस्थानो की तरह एक वर्ष में 100 ऐसे संस्थानो को स्थापित कर सभी जिलों में ग्रामीण विकास एवं ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किये जाएं जिससे रोजगार में वृध्दि होगी। तथा लोगों की आर्थिक स्थिति, रहन सहन , वेशभूषा एवं उपभोग प्रवृित्त में बदलाव आएगा।

जैन कविता (2010)[8] ने ''ग्रामीण महिलाओं हेतु कुटीर उघोग '' नामक विषय का अध्ययन कर बताया कि ग्रामीण खेतीहर महिलाएं सहज उपलब्ध स्थानीय उत्पादो का प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन करे। पौष्टिक व औसधीय गुणवता वाली वस्तुओं के लिए राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर बाजार मूल्य सवंर्धित पदार्थ के विपणन खुले है। सब्जी फूलों व फलों का मूल्य संवर्धन कर लाभ अर्जित किया जा सकता है। जिससे भूखमरी, बेरोजगारी से निजाद पाकर अपने जीवन स्तर में वृद्धि कर सकते है।

यादव संगीता (2010)[9] ने '' ग्रामीण भारत की बदलती तस्वीर'' नामक विषय का अध्ययन कर बताया कि वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं में वृद्धि के साथ सूचना प्रौद्योगिकी की भी

विस्तार हो रही है। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से बदलाव हो रही है, साथ ही ग्रामीण प्रवृत्ति, वेशभूषा, रहन–सहन में भी तीव्र परिवर्तन हो रही है।

सिंह कुमार संतोश (2010)[10] ने ‘’ स्वास्थय, सूचना, और रोजगार से ग्रामीण विकास‘’ नामक विकास का अध्ययन कर बताया कि सरकार विभिन्न ग्रामीण विकास कार्यक्रमों जैसे राष्ट्रीय स्वास्थय मिशन, मनरेगाा, सूचना का अधिकार क्रियानवित कर रही है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा का विकास तथा रोजगार में वृद्धि हो रही है। प्रमुख कृषि उत्पादों चावल, गेंहू, तिलहन, कपास,जूट, गन्ना आदि की खेती में भी तीव्र परिवर्तन हो रही है। इसी कारण लोगों की उपभोग प्रवृत्ति बदलती जा रही है।

श्रीवास्तव नि□ाा (2011)[11] ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि वर्तमान में विज्ञापन ने जनमानस में उपभोक्तावादी मानसिकता को बढ़ाया है। प्रत्येक व्यक्ति उपभोक्ता होता है चाहे वह राहगीर हो या विशिष्ट व्यक्ति जैसे राष्टपति, उपभोग के लिए वस्तुए खरीदने वाला और सेवाओं का लाभ उठाने वाला व्यक्ति उपभोक्ता कहलाता है प्रायः सभी उत्पादक अपने उत्पाद की जानकारी विज्ञापन द्वारा देते है, जहां उचित कीमत एवं गुणवत्ता वाली वस्तुएं खरीदना उपभोक्ता का अधिकार है। उपभोक्तावाद इस सीमा तक प्रभावित हो रहा है कि अनावश्यक चीजें आवश्यक लगने लगी है जिससे उपभोग प्रवत्ति में तीव्र परिवर्तन हुआ है और साथ ही उपभोक्ता उत्पाद एवं विपणन का अधिकार रखने वाले वर्ग से शोषण का शिकार हो रहा है इनही कारणों से उपभोक्ता के हितो का संरक्षण हेतु शासन द्वारा विभिन्न प्रयास किये गये हैं । जिसे उपभोक्ताओं की गुणवत्ता वाली वस्तुएं, सेवाएं और उपयोतिाएं निर्देशित रूप से उपलब्ध करा सकें। इससे भी उपभोग के स्वरूप में तीव्र परिवर्तन हुए है।

श्रीवास्तव राजे□ा (2011)[12] ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि सरगुजा, कोरिया जिले के ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ऋण अर्थ व्यवस्था क समस्या कृषि व्यवस्था की समस्या से बड़ी है। भू–स्त्रोत का छोटा स्त्रोत सिंचाई के साधनो का अभाव , उन्नत कृषि का पुरातन पद्धति द्वारा संचालन, गरीबी, अशिक्षा, बुनियादी सुविधाओं का अभाव, ग्राम विकास योजनाओं का क्रियान्वयन एंजेन्सी व ईकाईयों के व्यापक भ्रष्टाचार व निष्ठा के कमी के कारण ग्रामीण विकास सही आकर नहीं ले पा रही है। और ग्रामीण परिवार आज भी जीवन निर्वाह की अवस्था में है। अतः उपयुक्त समस्याओं के कारणों को समझते हुए उनके समाधानों पर अमल किया जाय तो निश्चित रूप से ग्रामीण विकास योजनाओं के माध्यम से ग्रामीणों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाया जा सकता हैं

यादव सावित्री (2011)[13] ने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि किसान क्रेडिट कार्ड ने किसानों को आर्थिक समृद्धि प्रदान की है। गांवो में सूदखोरी, साहूकारी प्रथा को समाप्त किया हैं किसानो को 4 प्रतिशत ब्याज दर ऋण में छूट, कृषि अग्रिम पर ब्याज, मार्जिन, दर्घटना बीमा,योजना आदि सुविधा प्रदान कर किसानों के लिए आय का द्वार खोल दिये है, जिससे सामाजिक क्रांाति आयी है साथ ही उपभोक्ता बाजार में उपभोग में तीव्र बदलाव आया है।

भार्मा कुमार विजय (2011)[14] ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि सूचना प्राद्यौगिकी से बाजार के स्वरूप में तीव्र परिवर्तन हुआ है तथा लाखों युवाओं को रोजगार के अवसर मिले है। सरकार ने सूचना प्राद्योगिकी से संबंधित उत्पादन गतिविधियों की ईकाई, जॉबवर्क ईकाई, सेवा ईकाई, अथवा प्रशिक्षण ईकाई के लिए ऋण स्वीकृत किया है। समाचार, नेटवर्किंग, चिक्त्सा, मनोरंजन, कृषि संबंधित जानकारी प्राप्त हो रही है, जिससे रोजगार एवं उपभोक्ता बाजार में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है।

यादव भांभूनाथ (2011)[15] ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण क्षेत्रों में लघु एवं सीमांत किसानों को हरित क्रााति के प्रति जागरूकता एवं विभिन्न सुविधाएं प्रदान की जा रही है। वर्तमान में किसानो ंकी ऋण में तीन फीसदी राहत, पशुधन विकास, चारागाह, कृषि उपकरण और उत्पादकता में वृद्धि हुई जिससे लाखो लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रही है।

रंजन नवनीत (2011)[16] ने ''गांवों में शहर जैसी सुविधाओं का विस्तार'' नामक विषय का अध्ययन कर बताया कि वर्तमान में गांवों के विकास के लिए विभिन्न योजनाएं चलायी जा रही हैं। गांवों में स्वास्थय, शिक्षा, सड़क, डाकघर, बैंक जैसी सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। जिससे गांवों में सामाजिक क्रांति आयी है एवं लघु एवं कुटीर उघोग का भी तीव्र विकास हुआ है।

मैयती प्रदीपएंव आर. राव कविता (1995)[16] ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला है कि वर्ष 1960 से 1989–90 की अवधि में भारत के औद्योगिक वृद्वि में मांग पक्ष के तत्वों का विष्लेषण किया है। उन्होनें कृषि क्षेत्र में लगे हुए लोगों के उपभोग मांग और स्वप्रेरित व्यय को महत्वपूर्ण मांग ऋण के रूप में विष्लेषण किया है। अपने अध्ययन में उन्होनें पाया कि औद्योगिक उत्पादन से प्रभावित करने में सरकारी क्षेत्र का उपभोग और विनियोग व्यय औद्योगिक उत्पादन को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। औद्योगिक उत्पादन को प्रभावित करने में कृषि उत्पाद मिश्रित चर के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है क्योंकि यह उद्योगों के लिए कच्चामाल की आपूर्ति करने के साथ ही उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के लिए मजदूरी के द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं की पूर्ति करता है। अपनें प्रतिपगमन समीकरण मांडल में उन्होनें पाया कि सरकार के द्वारा 1 प्रतिशात स्वाचालित व्यय में वृद्धि किए जाने पर औद्योगिक उत्पादन और उपभोग वस्तुओं के उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई हैं। 1980 के दशाक में उन्होनें विनियोग के सीमांत प्रवृत्ति और औद्योगिक वस्तुओं के उपभोग के सीमांत प्रवृत्ति को अधिक पाया जिसके कारण औद्योगिक और कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई हैं। 1980 के दशाक में कर दरों में स्थिरता की प्रवृत्ति पायी गई, जिसका औद्योगिक उत्पादन पर अनुकुल प्रभाव पड़ा।

श्रीनिवास पी.वी. (1995)[17] ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला की भारतीय उद्योगों में अतिरिक्त उत्पादन क्षमता के अंतर्गत उन कारणों का विशलेषण किया है, जिसके कारण उद्योगों में अतिरिक्त क्षमता बनी रहती है। इन कारकों को उन्होंने मांग पक्ष के कारण पूर्ति पक्ष के कारण के रूप में विभाजित किया है। 1970 से 1984 की अवधि में आधरभूत सुविधाओं में कमी, ऊर्जा और यातायात के साधनों का अभाव तथा हड़ताल के कारण उद्योग विशोष बंद हो जाने के कारण पूर्ण उत्पादन क्षमता तक नहीं हो सकता था। मांग पक्ष की ओर से अतिरिक्त उत्पादन क्षमता के लिए

उत्तरदायी घटकों के रूप में उन्होंने पाया कि उपभोक्ता की रूचि में परिवर्तन होने के कारण मुद्रास्फीति को बढ़ाये जाने के कारण ज्यादा महत्वपूर्ण होते है।

उदारीकरण के अनुभवों का मुल्यांकन किया है, उन्होंने अपने अध्ययन में उदारीकरण के तीन बिन्दुओं पर विषेष ध्यान दिया है–

1. आर्थिक उदारीकरण के विनिर्माण के ढ़ाचे पर प्रभाव।
2. सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का निजीकरण पर प्रभाव।
3. उदारीकरण के नीति का प्रत्यक्ष विदेषी पर प्रभाव का विशलेषण किया है।

उद्योगों के स्थान विषेष पर केन्द्रित होने की प्रवृत्ति के संबंध में उन्होंने पाया कि वर्ष 1976 से 1989 की अवधि में उपभोग वस्तु उद्योग और पूंजीगत वस्तु उद्योगों के केन्द्रियकरण की प्रवृत्ति 80 प्रतिषत से घटाकर 75 प्रतिषत हुई है।

मोहनराव जे. (1996)[18] ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि निर्माण उद्योगों में उत्पादकता वृद्वि दर का माप किया है, उन्होंने अपने विशलेषण में पाया कि औद्योगिक क्षेत्र में पूर्ति पक्ष से कच्चेमाल की उपलब्धता में कमी, आधारभूत सुविधाओं में कमी, यातायात के साधनों का अभाव आदि के कारण कुल उत्पादन क्षमता तक उत्पादन करने में असमर्थ रहें हैं।

मांग पक्ष से उपभोक्ताओं की रूचि में परिवर्तन आ जाने के कारण उद्योगों के पूर्ण उत्पादन क्षमता तक उत्पादन नहीं कर पाया है। औद्योगिक उत्पादन को प्रभावित करने में सरकारी क्षेत्र का उपभोग और विनियोग महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। औद्योगिक उत्पादन का निर्धारण करने में कृषि विकास की दर की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यह एक ओर कच्चेमाल की पूर्ति, दूसरी ओर औद्योगिक वस्तु के लिए मांग का निर्माण।

चंद्रशेखर सी.पी. (1996)[19] में अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि आर्थिक सुधार कार्यक्रम के बाद के अवधि में औद्योगिक वृद्धि के कारणों को स्पष्ट किया है। कृषि क्षेत्र में उत्पादकता कृषि क्षेत्र में वृद्धि दर को बढ़ाने से जहां उद्योगों के लिए कच्चामाल और मजदूरी की आपूर्ति बढ़ती है, वही कृषि क्षेत्र के लोगों की आय बढ़ने पर औद्योगिक वस्तु की मांग बढ़ती हैं। साथ ही साथ सार्वजनिक औद्योगिक क्षेत्र में पूंजी निर्माण की दर और सरकार की वर्तमान व्यय नीति के कारण सामाजिक उपभोग प्रवृत्ति में परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं।

सिंह विद्यासागर (1988)[20] ने अपने अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला कि वाराणसी जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में लघु उद्योग, पषुपालन तथा डेयरी उद्योग, मतस्य पालन कार्यक्रम के विकास जिले में आचार, मुरब्बा, पापड़ एंव पेय पदार्थों आदि महिलाएं बनाती है और खाद्यान्न एंव पेय पदार्थ निर्यात भी करती हैं, जिनसे उनकी आय एंव जीवन स्तर में सुधार आयी है, साथ ही साथ उनकी उपभोग में भी वृद्धि हुई है।

चंद्राकर राजिम (1996)[21] ने यह निष्कर्ष निकाला है कि सर्वेक्षित ग्रामों में अधिक ऊर्जा की खपत ईंधन के लिए किया जा रहा हैं। इसके लिए परंपरागत साधन (लकड़ी, कोयला) आदि का प्रयोग किया जाता है। सर्वेक्षित गांवों में लकड़ी का उपयोग जंगल से या खरीद कर किया जाता है, गैर

परंपरागत साधन (गोबर गैस, एल.पी.जी गैस) की उपभोग निम्न है। प्रस्तुत अध्ययन से यह भी परिलक्षित होता है, कि आर्थिक स्तर उच्च होने के साथ–साथ गांवों में प्रकाष के लिए औसत उपभोग 45.52 प्रतिषत परिवारों द्वारा किया जा रहा है, लेकिन निम्न आय स्तर वाले परिवारों में प्रकाष के लिए मिट्टी के तेल का ही उपयोग किया जा रहा है।

शौली मजुमदार (1998)[22] ने "रायपुर जिले में ग्रामीण क्षेत्र का उपभोग प्रतिरूप" नामक विषय का अध्ययन कर बताया कि निम्न आय वर्ग वाले परिवारों में उपभोग प्रवृत्ति अधिक है और उच्च आय वर्ग वाले बचत प्रवृत्ति अधिक है। निम्न और मध्यम आय वर्ग के परिवारों में सदस्यों की संख्या अधिक होने से खाद्य पदार्थों की खपत अधिक मात्रा में होती है। उच्च आय वर्ग और उच्चतम आय वर्ग में औद्योगिक उत्पादन और ऊर्जा उपभोग अधिक मात्रा में होती है।

पाल डॉली (1998)[23] ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि निम्न आय वर्ग में चयनित परिवारों के कुल परिवार का 26.37 प्रतिषत है तथा मध्यम, उच्च व उच्चतम आय वर्ग क्रमषः 24.88 प्रतिषत, 23.8 प्रतिषत व 24.88 प्रतिषत हैं। कृषि उत्पादन उपभोग के विष्लेषण से ज्ञात होता है कि निम्न आय वर्ग द्वारा चावल की खपत सर्वाधिक मात्रा में होती है तथा उच्च एंव उच्चतम आय वर्ग में औद्योगिक वस्तु का उपभोग अधिक है। निम्न आय वर्ग में ऊर्जा के उपभोग के रूप में लकड़ी, कोयला व मिट्टी का तेल की उपभोग अधिक है और उच्च आय वर्ग में गैस, बिजली, पेट्रोल व डीजल का उपभोग सर्वाधिक होता है जो सर्वेक्षित गांओं में उपभोग स्तर में वृद्धि को बताता है।

मिश्रा पौल ककौली (2004)[24] ने "जनजाति और विकास कार्यक्रम" नामक विषय का अध्ययन कर बताया कि वीरभूज जिले में अधिकांष कृषि, पषुपालन, मुर्गीपालन व्यापार में वृद्धि के लिए अनेक योजनाएं चल रही है। क्रियान्वित योजनाओं का परिणाम प्रभावशाली नहीं है जिसके कारण यहाँ की आय, उपभोग प्रवृत्ति बहुत निम्न है। यहाँ क्रियान्वित योजनाओं का लाभ भूमि स्वामित्व वाले परिवारों में योजनाओं का धनात्मक प्रभाव देखा गया, परन्तु भूमिहीन स्वामित्व वाले हितग्राही परिवारों में योजनाओं का प्रभाव कम देखा गया है।

आजाद श्री (2011)[25] ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि मानवीय उपभोग के कारण पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन तेजी से समाप्त होते जा रहे है। मानवीय उपभोग से जीवन रक्षक पारिस्थितिकीय प्रणाली क्षमता भी कम हो रही है। वैज्ञानिक प्रमाणों से सिद्ध होता है कि जलवायु परिवर्तन के कारण पूरे विशव में रोगों की तीव्रता में वृद्धि हो जाएगी खास तौर से, विकासषील देषोंमें जहां स्वास्थ्य सेवाएं नहीं पहुंच पाती है "इनोवेटिव एक्सपीरियेन्स इन एड्रेसिंग पापुलेषन एण्ड रिप्रोडक्टिव हेल्थ चैंलेंजेस इन पी पी डी मेंबर स्टेट" विषयक एक प्रकाषन को जारी किया। पीपीडी एक अंतर सरकारी व्यवस्था है, जो 1994 में शुरू की गयी थी। इसका उद्देष्य जननीय स्वास्थ्य जनसंख्या और विकास को बढ़ाने और सुधार करना है।

जगदीश ए. (2012)[26] ने "भारत में पवन ऊर्जा के उपयोग के कार्यनीति बनाना" नामक विषय का अध्ययन कर बताया कि उन्नत पवन ऊर्जा टरबाइन प्रौद्योगिकी का विस्तार करने का व्यापक क्षेत्र है। बड़े आकार की पवन टरबाइनों की संस्थापना तकनीकों पर व्यापक अनुसंधान के साथ पारंपरिक विद्युत से प्रतिस्पर्धा करने के लिए अपतटीय पवन फर्मों के माध्यम से विद्युत उत्पादन की लागत कम होने की संभावना है। यू. एस. ए., चीन, दक्षिण कोरिया, ताइवान, फ्रांस और जापान जैसे देषों के बड़े स्तर पर अपतटीय पवन फर्मों को बनाने की महत्वकांक्षी योजनाएं है। नवीन और नवकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के अंतर्गत पवन ऊर्जा प्रौद्योगिकी केन्द्र विभिन्न संगठनों द्वारा बनाये गए पवन विद्युत

संभाव्यता के लिए संसोधित अनुमानों को वैध करने हेतु पुर्नमूल्यांकन कार्यक्रम आरंभ कर रहें है जिससे भविष्य में देष में खड़े किए जा रहे लंबे टावरों हेतु डाटा तैयार करने में मदद मिलेगी। पवन ऊर्जा प्रौद्योगिकी केन्द्र ने 80 मीटर की हब ऊचांई पर 102 जी. डब्ल्यू की संभावना का अनुमान लगाया जबकि एक दषक पहले 50 मीटर हब ऊचांई पर 49.2 जी. डब्ल्यू की संभाव्यता का अनुमान लगाया गया था।

भाोध साहित्य का संदर्भ सूची

1. प्लानिंग कमीशन – फर्स्ट फाइव प्लान 1951:, पृष्ठ 442
2. पुण्डेदेव ओझाा :– लघु और वृहद उद्योगों का विकास , नेशनल बैंक न्यूज रिव्हीव – बाम्बे पृष्ठ25–30
3. मिश्रा ओ.पी. के.एस. सहाय, यू.के. पाण्डे ''ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों के माध्यम से आय और रोजगार का सृजन पर साख का प्रभाव खादी ग्रामोद्योग, बाम्बे पृष्ठ 158
4. ठींहूंद कौंए ठ तंककलएश्पदकनेजतपंसप्रंजपवद – पउचसवलउमदज पद पदकपंश ए लवरदंए उंतबी 1998 चह दव.9
5. गुप्ता, देवेन्द्र बी., ''घरेलु क्षेत्र की आय और उपभोग'', भाग 17, संख्या 6, 1970, पृ. 707–716.
6. मजुमदार शैली 1999 ''रायपुर जिले में ग्रामीण क्षेत्र का उपभोग प्रतिरूप'' लघु शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि., रायपुर (छ.ग.)
7. पटेल कुमार सुधीश, ''पंचायती राज में रोजगार की बदलती स्वरूप'' कुरूक्षेत्र, जून 2011, वर्ष 57, अंक 8, पृ.क्र. 15–19
8. गाँधी हेमा (2009), ''हस्तशिल्प कला से रोजगार'' कुरूक्षेत्र, जुलाई 2009 वर्ष 55, अंक 9, पृ. क्र. 3–6
9. जैन कविता डॉ., ''ग्रामीण महिलाओं हेतु कुटीर उद्योग'' कुरूक्षेत्र, सितम्बर 2010, वर्ष 56, अंक 11 पृ.क्र. 32–36
10. यादव संगीता, ''ग्रामीण भारत की बदलती तस्वीर'' कुरूक्षेत्र, अगस्त 2010, वर्ष 56, अंक 10, पृ.क्र. 24–27
11. सिंह कुमार संतोष, ''स्वास्थ्य सूचना और रोजगार से ग्रामीण विकास'' कुरूक्षेत्र, जनवरी 2010, वर्ष 56, अंक 12, पृ.क्र. 18–22

12. श्रीवास्तव निशा, ''विज्ञापन का उपभोक्ता पर प्रभाव एवं उपभोक्ताओं की वैद्यानिक स्थिति एक अध्यय'' त्मेमंतबी ʽवदमए अवस 3ए छवण 3, श्रनदम 2011

13. श्रीवास्तव राजेश, ''ग्रामीण विकास में ग्रामीण विकास कार्यक्रम एवं ग्रामीण विकास बैंको के योगदान का सर्वेक्षणात्मक मूल्यांकन'' (छ.ग. राज्य के सरगुजा जिले के विशेष संदर्भ में) त्मेमंतबी श्रवदमए अवसण 3ए छवण 3ए श्रनदम 2011

14. यादव सावित्री, ''किसान क्रेडिट कार्ड से खत्म हुई किसानों की ऋण समस्या कुरूक्षेत्र, जून 2011, वर्ष 57, अंक 8 पृ.क्र. 3–9

15. शर्मा कुमार विजय, ''गाँवों में समृद्धि की राह दिखाता सूचना प्रौद्योगिकी ऋण'' कुरूक्षेत्र, जून 2011, वर्ष 57, अंक 8, पृ.क्र. 15–19

16. यादव शंभूनाथ ''खेती एवं किसानों का हितैषी बजट'' कुरूक्षेत्र, अप्रैल 2011, वर्ष 57, अंक 06, पृ.क्र. 20–25

17. रंजन नवनीत, ''गाँवों में शहरों जैसी सुविधाओं का विस्तार'' कुरूक्षेत्र अक्टूबर 2011, कुरूक्षेत्र वर्ष 57 अंक 12 पृ.क्र. 20–25

18. उंजप चतंकपच ंदक त्ंव त्ण् ड्ढंअपजंए श्क्मउंदक ेपकम बिजवत ंदक प्दकपें प्दकनेजतपंस ळतवूजीश्ए म्बवदवउपबे ंदक च्वसपजपबंस ॅममासल ।नह19ए1995ए च्ण् छव 2070 जव 2071

19. ैतपदपऔ चण्टण् दृ श म्गबमे बंचंबपजपमे प्द प्दकपं प्दकनेजतपंसश ेनचचसल वत क्मउंदक कमजमतउपदकए म्बवदवउपबे ंदक चवसपजपबंस ॅममासलए छवअ7ए 1992 च्ण्हण् छव 2437

20. त्ंवए श्रण् डवींदए श प्दकपें वि प्दकनेजतपंस च्तवकनब ज्पनपजल ळतवूजीश क्मेंतमेंजपवद – प्दजमतचतमजंजपवद म्बवदवउपबे ंदक चवसपजपबंस ॅममासलए क्मब 7ए 1996ए च्ंहम छ0 3177

21. ब्ंदकतांत ब्ण्टण् श म्गसंपदपदह चवेजए त्मतिवउ प्दकनेजतपंस ळतवूजीश म्बवदवउपबे ंदक चवसपजपबंस ॅममासलए छवअै.मचजए1968ए च्ह.छव 2537

22. सिंह विधासागर , '' वाराणसी जिले में लघु उधागों का विकास एवं सामाजिक विवेचन खादी ग्रामों उधोग , बाम्बे , 1988, पृष्ठ संख्या– 337

23. चन्द्राकर रश्मि, ''रायपुर जिले में ग्रामीण ऊर्जा उपभोग प्रतिरूप एक भौगोलिक अध्ययन'' भूगोल अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छ.ग., वर्ष 1996–97

24. पाल डौली, ''रायपुर नगर का उपभोग प्रतिरूप'' कोटा वार्ड का प्रतिकात्मक अध्ययन, भूगोल अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छ.ग., वर्ष 1998–99

25. मित्रा, के.पी. 2004 '' डेवलपमेंट प्रोग्राम एण्ड ट्राइबल्स सम एमर्जिन इसूज'' कल्पात्र पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

26. आजाद श्री, '' मानवीय उपभोग से पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन समाप्त हो रहे है'' वर्ष 40, अंक 3, अक्टुब्र–सित्मबर 2011

27. जगदीश ए, ''भारत में पवन ऊर्जा के उपयोग की कार्यनीति बनाना'' अक्षय ऊर्जा ए वर्ष 6, अंक 2 अक्टुबर 2012

अध्याय 3

3.1 बलौदा बजार जिले का सामन्य परिचय

बालौदा बाजार जिले की अपनी एक गौरवशाली ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। बलौदा बाजार जिले के अंचल से महानदी , जोंकनदी एंव शिवनाथ नदी जैसी नदिया अपने कलकल की आवाज से जहां प्राकृतिक छटा बिखरेती है। वही बहुत सारे नाले एवं बांध भी अपनी मनोहरी दृश्य से सबका मनमोह लेते है। बालौदा बाजार जिले भी एक सौ वर्ष पुराने तहसीलों में से एक है। अग्रेंजो के समय में परसाभदेर गांव में अग्रेंजो ने अपना प्रशासनिक मुख्यालय बनाया था जो सन् 1905 में इसे तहसील घोषित किया गया था। आजादी के बाद सामुदायिक विकासखण्डों की योंजना शुरू होने पर इस तहसील में छः विकासखण्डों – बलौदा बाजार , पलारी, भाठापारा, कसडोल, बिलाईगढ, और शिमगा की स्थापना की गई। इसके बाद राज्यशासन द्वारा हाल के वर्षो में प्रशासनिक सुविधाके लिए बालौदा बाजार तहसील पुर्नगठित कर भाठापारा तहसील का निर्माण किया गया और उसे भी राजस्व अनुविभाग का दर्जा दिया गया । बलौदा बाजार जिले में अपर कलेक्टर का कार्यलय पहले से ही संचालित है जिसके संम्पूर्ण कार्यक्षेत्र को मिलाकर नए बलौदा बाजार जिले का गठन किया गया ।

बलौदा बाजार जिले का निर्माण रायपुर जिले को 18–01–2012 को पुर्नगठित कर बनाया गया है। बलौदा बाजार का क्षेत्रफल लगभग 3593 वर्ग किलोमीटर है, जिसकी कुल जनसंख्या लगभग 13 लाख से अधिक है। इस जिले में 975 ग्राम , 495 ग्राम पंचायत, छः विकासखण्ड – बलौदा बाजार , पलारी ,भाठापारा, बिलाईगढ, कसडोल, और शिमगा , तीन नगर पंचायत क्षेत्र और तीन नगर पंचायत परिषद शामिल है। छत्तीसढ की कई प्रमुख आस्था केन्द्र भी अलग होकर नये बलौदा बाजार जिले में आ गए हैं। इनमें महान् समाज सुधारक गुरू बाबा घासीदास जी की जन्म स्थली एवं तपोभूमि गिरौदपुरी भी शामिल है, जहॉ राज्यशासन द्वारा कुतुबमीनार से भी ऊंचा जैतखाम का निर्माण तेजी से कराया जा रहा है। शहीद वीरनारायण सिंह जैसे 1857 के गदर के योध्दा की जन्म स्थली सोनाखान , कबीरपंथ का प्रमुख आस्था केन्द्र दामाखेडा , महिर्षि वालमिकी के आश्रम के रूप में प्रसिध्द तुरतुरिया भी नये बलौदा बाजार जिले में शामिल है। इसके अलावा लवन का महामाया मन्दिर , बलौदा बाजार का ऐतिहासिक मावली मन्दिर शामिल है,जो श्रद्धालुओं के प्रमुख आस्था केन्द्र है।

वैसे तो बलौदा बाजार जिला कृषि प्रधान जिला है, लेकिन यहां चूना पत्थर के विशाल प्राकृतिकभण्डारों के कारण सीमेंण्ट कारखाने संचालित हो रहे हैं। जिसमें लफार्ज सीमेंण्ट सोनाडीह , अल्ट्राटेक सीमेंण्ट हिरमी , अंबुजा सीमेंण्ट रवान , ग्रासिम सीमेंण्ट रावन , आदि इस क्षेत्र की महत्ता को प्रकट करते हैं। रायपुर जिले की सर्वाधिक शांत तहसीलों में बलौदा बाजार भी शामिल है , जो अपने सांस्कृतिक पराम्राओं , रूढियों , एवं आदर्शो को समेटे शनैः–शनैः विकास की ओर अग्रसर है , साथ ही बलौदा बाजार जिले में चावल की बडी–बडी राईस मिलें है।

ग्रामिण क्षेत्रों में जहां भारतीय के दर्शन होते है , वही नगरीय क्षेत्रों में औद्योगिक प्रगति के कारण महानगरीय जीवन एवं सभ्यता की भी झलक देखने को मिलती है।

3.2 भौगोलिक आर्थिक वि□ोशताएं

स्थिति एवं विस्तार : – 1 नवम्बर सन् 2000 में गठित नवराज्य छत्तीसगढ के नक्शे पर बलौदा बाजार जिला रायपुर जिले के उत्तर मे 21̇, 67′ उत्तरी अक्षांश से 82̇, 17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। डल्यू जी 584 में बलौदा बाजार जिले की स्थिति विस्तार 21̇,40′12′′ उत्तरी अक्षांश से 82̇,10′12′′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। बलौदा बाजार जिले की भौगोलिक संरचना में पूर्व की ओर इसकी सीमा सरसीवा से प्रारम्भ होकर पश्चिम दिशा में सिमगा में समाप्त होती है। जिले के उत्तर पश्चिम में शिवनाथ नदी जिले की सीमा बनाती है। दक्षिण सीमा में बारनयापारा की जंगल इसकी सरहद का निर्माण करती है। यह जिला रायपुर , बेमेतरा , मुंगेली , बिलासपुर , जांजगीर , रायगढ तथा महासमुन्द की सीमा से घिरा हुआ है। इस जिले में रायपुर लोकसभा एवं जांजगीर लोकसभा के क्षेत्र शामिल है। इसी प्रकार चार विधानसभा क्षेत्र बलौदा बाजार , भाठापारा , कसडोल , एवं बिलाईगढ इसमें शामिल है।

तालिका 3.1 भौगोलिक स्थिति

क्र	जिला / तहसीलका नाम	अक्षांस	देक्षांस	भौगोलिक क्षेत्रफल हेक्टयर में
1	सिमगा	21′,–32′–11श	82′–09′–40श	584.00
2	भाटापारा	21′–39′–11श	82′–09′–29श	740.00
3	बलौदाबाजार	21′–37′–09	81′–42′–38श	604.51
4	प्लारी	21′–44′–07श	81′–06′–22श	5441.45

5	क्सडोल	21′–38′–14श	82′–43′–39श	679.83
6	बिलाईगढ़	21′–36′–54श	82′–25′–34श	656.17
7	बलौदाबाजार			

स्त्रोतः जिला सांख्यिकीय पुस्तिका

भूवैज्ञानिक संरचना

भूमि उपयोग के अध्ययन में भूभौतिकी की जानकारी आवश्यक है,बलौदा बाजार में कुडप्पा क्रम की शैले पायी जाती है । यहां निम्न प्रकार के शैले मिलती है –

1.रायपुर शैले ।

2. खैरागढ बलुआ शैल।

3. गुण्डरदेही शैल।

4. चारामा चुना युक्त शैले ।

धरातल :– बलौदा बाजार छत्तीसढ बेसिन का एक भाग है। अतः यह समतल मैदानी क्षेत्र है, दक्षिण में सण्डी के पास समुद्र तल से ऊंचाई 27 मी. है जबकी सण्डी के पूर्व महानदी के किनारे स्थित रीवाडीह के पास सबसे कम 248 मी. ऊंचा है। तहसील के उत्तर में ढाबाडीह के पास 258 मी. ऊंचा है तथा इसे पूर्व में बरदा के पास 249 मी. ऊंचा है। बलौदा बाजार के मध्य भाग में कोसमंदा के पास 270 मी. ऊंचा है।इसतरह संम्पूर्ण धरातलीय रचना मैदानी है, और इसका ढाल दक्षिण पश्चिम से पूर्व की ओर है, जो प्रवाह तंत्र को नियंत्रित करते है, अधिकतम 274 मी. और सबसे कम 248 मी. का अंतराल 26 मी. है। बलौदा बाजार जिले नदियो केप्रवाह तथा उनके जल के क्षेत्र

(1) शिवनाथ व जमुनइया नाला प्रवाह प्रणाली :–

इस प्रवाह प्रणाली में मुख्य शिवनाथ नदी है। तहसील में इसकी कुल लंबाई 35 कि. मी. है। यह दुर्ग जिलें से निकलकर सोनाडीह के पास से तहसील की उत्तरी समीा का निर्धारण हुई संवाहित होती है तथा आगे पैसर चंगोरी के पास मुख्य नदी महानदी में मिल जाती है इस प्रवाह प्रणाली को सहायक समनइया नाला है तहसील सीमा में कुल लंबाई 12.5 कि.मी. है। यह नाला लवन के पास तहसील का सीमा निर्धारित करता हुआ सोनाडीह के पास मुख्य नदी शिवनाथ

नदी ने मिल गया है। इसके प्रवाह में तीन नाले आते हैं, जिसकी लंबाई 25 कि.मी. है यह प्रणाली तहसील क्षेत्र में लगभग 45 कि.मी. लम्बी है तथा इस प्रवाह क्षेत्र के अंतर्गत 35 ग्राम आते है।

(2) महानदी व करबारी नाला प्रवाह प्रणाली :–

महानदी तहसील की प्रमुख नदी है। इसका उद्‌गम धमतरी के किन्नर सिहावा (नगरी) की पहाड़ी से 42 कि.मी. की है। और यह दक्षिण पूर्व की आरे बहती हुई तहसील सीमा का निर्धारण करते हुए अपनी मुख्य सहायक नदी, शिवनाथ नदी में लगभग 10 कि.मी.दूरी तय कर मिल जाती है। जहाँ इसके संगम स्थ्ल पर प्रसिद्ध तीर्थ स्थल शिवरीनारायण स्थित है। करकारी नाला अपने उद्‌गम स्थल लवन से कोरदा, मरदा होते हुए 10 कि.मी. लंबी यात्रा के बाद सेमरिया के समीप महानदी में मिल जाती है। इसमें से गुण्डरदेही शैल सर्वाधिक पायी जाती है।

अपवाह तन्त्र :–

बलौदाबाजार तहसील नदियों की संख्या तथा उनके जल के क्षेत्र के विस्तार की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है। अपवाह मानचित्र से स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र का प्रवाह दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर आर्थ यहां की नदियों पर स्थलाकृति का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

तहसील के प्रवाह प्रणाली को चार प्रतिरूपों में बांट सकते है

(1) शिवनाथ व जमनइयय प्रवाह प्रणाली

(2) शिवनाथ नदी व खोरसी नाला प्रवाह प्रणाली

(3) यदानदी व करकारी नाला प्रवाह प्रणाली

(4) महानदी व गिदोला नाला प्रवाह प्रणाली

(3) िावनाथ नदी व खोरसी नाला प्रवाह प्रणाली :–

इस प्रणाली का मुख्य नाला खोरसी नाला है जो बलौदाबाजार तहसील के सीमा क्षेत्र के अंतर्गत प्रवाहित होने वाला सर्वाधिक लंबा नाला है। यह 12.50 कि.मी. लम्बा है। इसके दक्षिण परिक्षेत्र में खरोरा से निकलकर जारा, औरांसी होते हुए उत्तर में कसियारा के निकट शिवनाथ नदी में विलीन हो जाती है।

जलवायु :–

इस क्षेत्र की जलवाय उष्णकटिबंध आर्द्र जलवाय है। यहाँ मानसुनी वाय से वर्षा होती है। किसी स्थान के परिवर्तनशील मौसम के तत्वों का विशेष समय संदर्भ में ज्ञात किया गया औसत दी जलवायु है।

किसी स्थान विशेष पर वायुमण्डल की अल्पकालीन दशाओं को मौसम कहते है। मौसम की जानकारी हेतू ताप, दाब, आर्द्रता तथा हवा आदि का पूर्ण अध्ययन करना जरूरी है। किसी स्थान विशेष के मौसम की औसत दशा ही जलवायु है।

भौगोलिक पर्यावरण के समस्त में जलवायु वातावरण का सबसे महत्वपूर्ण प्रभावशाली क्रियाशील समर्थ तत्व है। यह भौगोलिक वातावरण के सभी तत्वों जैसे – वर्षा, तापमान, वायुगति , वायुदाब आदि में से जलवायु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से क्रियाशील रहती है। जलवायु प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दोनों प्रकार की परिस्थितिकी प्रभावित है। यह किसी भी प्रदेश के विकास कार्यों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है, व्यक्ति के कार्य क्षमता उपज की वस्तु विभिन्न प्रकार है, व्यक्ति के कार्य क्षमता उपज की वस्तु विभिन्न प्रकार के संसाधनों का दोहन करके विकास के रूप को बहुत सीमा तक जलवायु ही निर्धारित करती है।

कोपमें जलवायु वर्गीकला के अनुसार यह क्षेत्र एम.एम. जलवायु प्रदेश के अंतर्गत आता है। गर्मियों से वर्षा और जाड़ों में शुष्कता इसकी मुख्य विशेषताएं है थार्नश्वेत जलवायु वर्गीकरण के अनुसार यह क्षेत्री सी.एस. डब्ल्यू जलवायु के अंतर्गत आता है।किसी क्षेत्र के कर्मियों का भौगोलिक पृष्ठभूमि से जलवायु का घनिष्ठ संबंध होता है।

तापमान :–

पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार की जलवायु प्रदेश, वनस्पत्ति प्रदेशो, जीव–जन्तुओ तथा मानव का अस्तित्व मूलरूप से तापक्रम के विवरण पर ही आधारित है। तापमान को प्रभावित करने वाले तत्वों में – स्थिति, आक्षांशों से दूरी, सागर तट से ऊंचाई धरातल का स्वाभाव, वायुदाब, प्रचलित पवन आदि है, जिससे तापमान परिवर्तित होता रहता है। जिसके कारण प्रत्येक दिन के तापक्रम में अंतर पाया जाता है।

बलौदाबाजार जिले के मौसमी परिवर्तनों के आधार पर तीन ऋतुओं में विभाजित किया जा सकता है –

(1) **भीत ऋतु** :— मानसून के लौटने के समय शीत ऋतु का आगमन होता है। बलौदाबाजार में शीत ऋतु 15 अक्टूबर से 15 फरवरी तक रहती है। सबसे कम तापमान दिसम्बर और जनवरी में होता है। जिसमें अत्यधिक ठंड पड़ती है। हवाये प्रायः धीमी गति से बहती है तथा आकाश स्वच्छ रहता। रात में शीत, पाला व कुहरा पड़ता है।

(2) **ग्रीश्म ऋतु** :— उत्तरपूर्वी मानसून के पश्चात् ग्रीष्मऋतु का आगमन होता है। जो 15 फरवरी से 15 जून तक रहता है। 21 मार्च के बाद सूर्य उत्तरायण हो जाने के कारण उत्तरोत्तर गर्मी बढ़ती जाती है। इस ऋतु में मई जून में दोहर के पश्चात् गर्म शुष्क आंधियाँ चला करती है जिन्हें लू कहते है। अधिक तापमान वायु में गर्मी की मात्रा को कम कर देता है अधिकतम औसत तापमान 20^0ࣤ रिकार्ड किया गया था।

(3) **वर्शा ऋतु** :— ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा ऋतु का आगमन होता है। रायपुर जिला मानूवी हवाओं के अंतर्गत आता है। अतः मानसूनी वर्षा होने के कारण यहाँ अनिश्चित वर्षा होती है। यहाँ वर्षा 15 जून से 15 अक्टूबर तक होती है वर्षा होने के साथ—साथ तापमान भी कम हो जाता है तथा आर्द्रता की मात्रा बढ़ती जाती है। आर्द्रता की मात्रा करीब 75 प्रतिशत हो जाती है। अगस्त और सितम्बर माह में सर्वाधिक वर्षा होती है। वर्ष 2002 में अगस्त माह रायपुर में 344.6 मि.मी. वर्षा रिकार्ड किया गया।

तालिका क्रमांक 3.2

बलौदाबाजार जिले में वार्शिक वर्शा 1993—2001 (मि.मी. में)

वर्श	जून	जूलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	योग
1992	145.10	261.90	139.20	245.30	01.2	889.20
1993	102.00	131.80	217.60	47.40	—	498.80
1994	76.40	169.40	216.40	108.60	09.20	580.00
1995	83.00	329.00	306.60	263.80	62.60	1045.00
1996	473.60	535.00	173.75	85.05	13.20	1280.60
1997	92.80	313.80	228.80	27.80	11.80	674.80
1998	39.00	258.70	268.00	50.40	06.50	661.60

1999	98.90	313.30	183.00	147.80	—	723.00
2001	28.00	205.40	108.10	116.80	59.00	516.50

स्त्रोत :— सांख्यिकीय कार्यालय बलौदाबाजा

तलिका 3.3   2002—2001 में 12 महीनों की तापमान में भिन्नता

मह	**अधिकतम**	**न्यूनतम**	**औसत न्यनतम**
जनवरी	29.28	16.20	22.79
फरवरी	30.21	16.22	93.21
मार्च	38.20	22.86	30.52
अप्रैल	39.45	93.94	31.69
मई	44.48	98.83	36.53
जून	37.49	28.63	33.07
जुलाई	31.27	25.30	29.79
अगस्त	31.27	24.31	98.09
सितम्बर	32.20	23.98	27.92
अक्टूबर	37.76	21.89	2792
नवम्बर	30.38	15.66	23.04
दिसम्बर	27.64	11.33	19.48

स्त्रोतः जिला सांख्यिकीय पुस्तिका

मिट्टी :–

मिट्टी जीवन के लिए अतिआवश्यक है। मिट्टी के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। चाहे मानव हो या जीव जन्तु दोनों के भोजन इसी में निहित होता है हम किसी भी प्रदेश में वन, घास, कृषि भूमि उपयोग फसलों के प्रादेशिक वितरण को उनके उत्पादन की मात्रा था उत्तमता श्री मिट्टी की प्रकृति से निर्धारित होते है। अतः भौगोलिक विघटन में मिट्टी का अध्ययन एक आवश्यक अंग है।

बलौदाबाजार कृषि प्रधान होने के कारण यहाँ अधिकांश लोग कृषि करते है 7 मिट्टी एक आधारभूत संसाधन है। मिट्टी से प्रत्यक्ष अथवा, अप्रत्यक्ष रूप से मानव को भोजन प्राप्त होता है। मिट्टी के धरातल पर उगने वाले पेड़ पौधे को जीवांश प्रदान करती है।

प्रो.सी.ई. कैलोन के अनुसार ''मिट्टियों को जो कि हमारी सहायक है। चट्टानों, जलवाय, दाल, वनाचति तथा समय के विभिन्न संयोगों का उत्पादन बातया जाता है।

डॉ. बेनेट के अनुसार ''मिट्टी भू–पृष्ठ पर मिलने वाली असंगठित पदर्थों की यह पर्त है जो मूल चट्टानों अथवा वनस्पत्ति के योग से बनता है''

तलिका 3.4 भूमि उपयोग

क्र.	जिला / तहसील	भूमि उपयोग			
1	सिमगा	61285	158	6206	492
2	भाटापारा	46976	8	3882	6133
3	बलौदाबाजार	60439	962	5931	5553
4	प्लारी	57087	708	4915	5171
5	क्सडोल	67983	12448	9132	5214

6	थ्बलाइग	65616	10781	7276	5486
7		359386	25065	37342	32481

स्त्रोतः अधीक्षक भू–अभिलेख

वर्गीकरण :–

सम्पूर्ण छ.ग. में लाल व पीली मिट्टी पायी जाती है। पीला रंग केरिक ऑक्साइड क`जल यूजिक के कारण पाया जाता है तथा लाल रंग एवं लोहे के कणों के ऑक्सीजन के कारण होता है। अधिकांश यहाँ हल्की मिट्टी मिलती है। किन्तु बीच में भारी चिकनी, दोमट मिट्टी के क्षेत्र भी मिलते है।

बलौदाबाजार में पायी जाने वाली साधारणतया मिट्टियों का विभाजन सघन कृषि कार्यक्रम योजना भूमि, अभिलेख कार्यलय की जानकारी और क्षेत्रीय आधार पर विभिन्न भागों में विभाजन किया गया है जो निम्नलिखित है :–

(1) मटासी मिट्टी (भूरे रंग युक्त मिट्टी)

(2) कन्हार मिट्टी (काली मिट्टी)

(3) डोरसा मिट्टी

(4) भाठा मिट्टी

(5) कहबरी मिट्टी

(1) मटासी मिट्टी :–

मटासी मिट्टी उच्च व नदियों वाले क्षेत्रों में पायी जाने वाली हल्के गढ़न वाली पीली रेतीली मिट्टी है। इसमें मिट्टी का मिश्रण अधिक रहता है बलौदाबाजार .... से भी अधिक भागों में यह मिट्टी फली हुई है। इसमें कन्हार मिट्टी की आर्द्रता रखने की क्षमता नहीं होती है।

(2) कन्हार मिट्टी :–

कन्हार मिट्टी गहरे व गाढ़ रंग की ''ढक्कन केप'' से उत्पन्न मिट्टी है जो मैदानी भागों में पायी जाती है। यह मिट्टी बलौदाबाजार में 32 प्रतिशत अधिक भागों में फैली हुई है। जिसमें पानी

की नमी धारण करने की क्षमता अधिक होती है तथा गिले होने पर चिपचिपी होती है। इसमें पर्याप्त लोहे व चूना अंश मिला होता है तथा हाइड्रोजन की मात्रा 95 प्रतिशत पायी जाती है। ये रबी की फसल के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

(3) डोरसा मिट्टी :–

भूरी व पीले रंग की मिटि्यों कन्हार मिट्टी और मटासी मिट्टी के बीच पायी जाती है। यह विभिन्न मिट्टी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होती है। मैदानी में इस मिट्टी का फैलाव 31 प्रतिशत से अधिक भागों में है ये मिट्टी दो फसली होने के कारण अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसमें जलग्रहण करने की क्षमता अधिक है।

(4) भाठा मिट्टी :–

इस प्रकार के मिट्टी का विस्तार के 12 प्रतिशत भाग पर है। यह कृषि कार्य के लिए उपयुक्त है। यह मिट्टी पीले व भूरे रंग की होती है इसमें चूने का अंश मिला होता है तथा लगभग एक फीट होती है। पर्याप्त वर्षा होने पर कही–कहीं और अनाज की कृषि होती है।

(5) कछारी मिट्टी :–

ये मिट्टी नदी घाटी क्षेत्रों में होती है समतल क्षेत्र महानदी और शिवनाथ नदी घाटी में पायी जाती है। समतल क्षेत्र और अत्याधिक उपजाऊपन के कारण इनका उपयोग सघन कृषि में किया जाता है।

तलिका 3.5 मिट्टी के प्रकार :–

क्र.	मिट्टी के प्रकार	क्षेत्रफल हेक्टेयर में	क्षेत्रफल
1	मटासी	27.476	32.67
2	कन्हार	27.216	32.37
3	डोरसा	18.289	21.75

4	भाठा	10.354	13.31
5	कछार	1.741	0.88

स्त्रोतः जिला सांख्यिकीय पुस्तिका

सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिचय

1.जनसंख्या वितरण :–

जनसंख्या एक ग्यात्मक तत्व है। मानव के सभ्यता के विकास किया है। उसकी गतिशीलता आर्थिक एवं तकनीकी विकास के साथ–साथ बढ़ती रही है। मनुष्य केन्द्र है, जिसके संदर्भ में अन्य घटक देखे जाते हैं। मानव के संयोग से ही अन्य तत्व का अर्थ और महत्व है, इस प्रकार जनसंख्या भौगोलिक अध्ययन का मुख्य आकर्षण रहा है।

जनसंख्या के वितरण में ही हमें यह पता चलता है कि सामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं में क्या–क्या परिवर्तन हो रहे। 2001 में बलौदाबाजार तहसील में

तालिका 3.6 जनसंख्या वितरण

क्र	जनसंख्या	इकाई	छत्तीसगढ़	जिला
1	जनसंख्या का घनत्व2011	प्रति वर्ग कि. मी.	189	310
2	दसवर्षीय जनसंख्या वृध्दि दर1991–2001	प्रतिशत	22.59	34.65
3	लिंगानुपात2011	प्रतिशत	991	983
4	नगरीय जनसंख्या का कुल जनसंख्या से प्रतिषत 2001	प्रतिशत	31.76	30.42
5	ग्रमीण जनसंख्या का कुल जनसंख्या से प्रतिषत 2001	प्रतिशत	33.86	69.58
6	अनुसूचित जाति का कुल जनसंख्या से प्रतिषत 2001	प्रतिशत	11.61	16.17
7	अनुसूचित जन जाति का कुल जनसंख्या से प्रतिषत 2001	प्रतिशत		12.11
8	मुख्य कार्यशील व्यक्तियों का कुल जनसंख्या से प्रतिषत2001	प्रतिशत		31.87

स्त्रोतः जिला सांख्यिकीय पुस्तिका

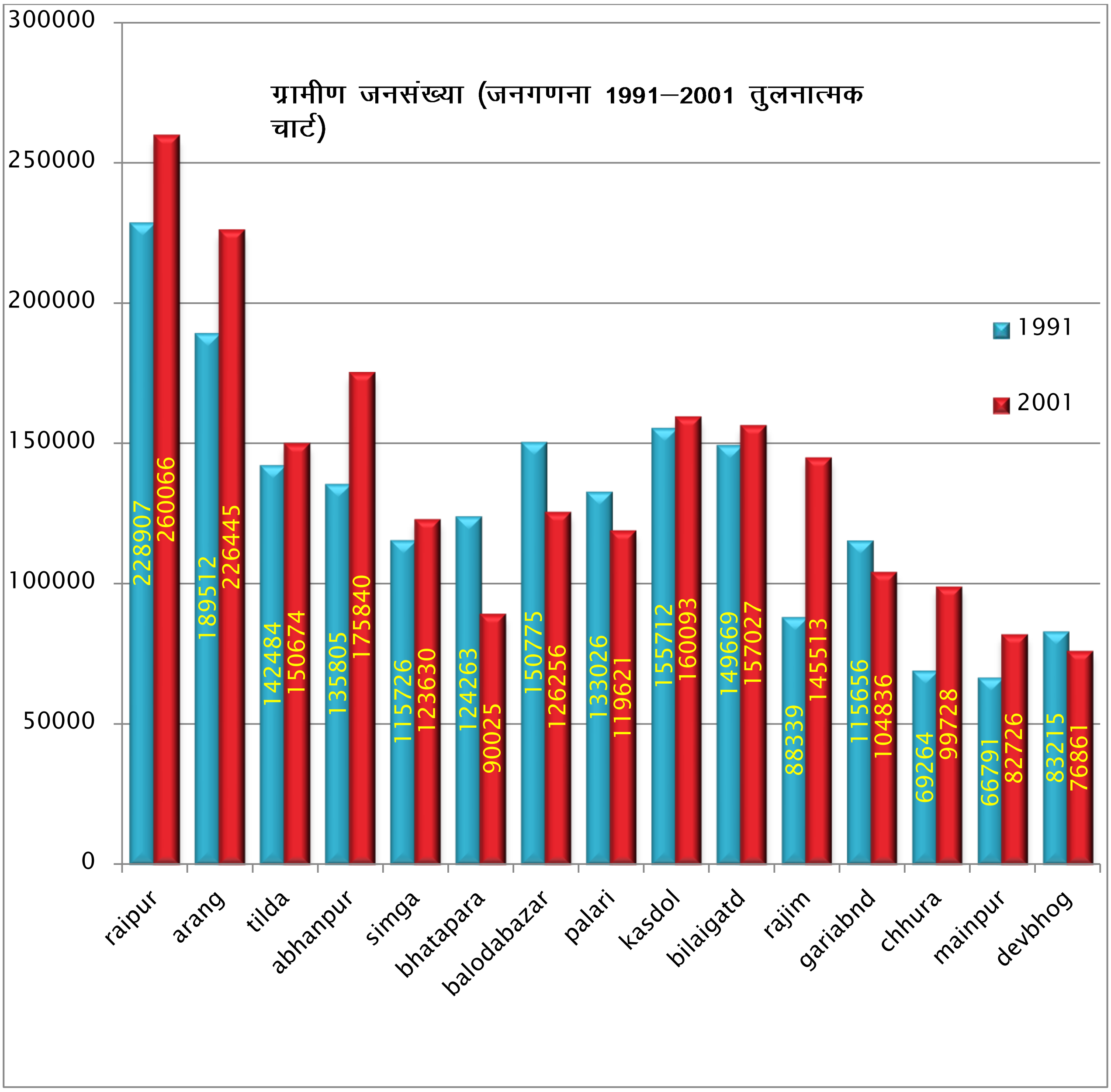

ग्रामीण जनसंख्या (जनगणना 1991–2001 तुलनात्मक चार्ट)
300000
250000
200000
150000
100000
50000
0
1991
2001
raipur 228907 260066
arang 189512 226445
tilda 142484 150674
abhanpur 135805 175840
simga 115726 123630
bhatapara 124263 90025
balodabazar 150775 126256
palari 133026 119621
kasdol 155712 160093
bilaigatd 149669 157027
rajim 88339 145513
gariabnd 115656 104836
chhura 69264 99728
mainpur 66791 82726
devbhog 83215 76861

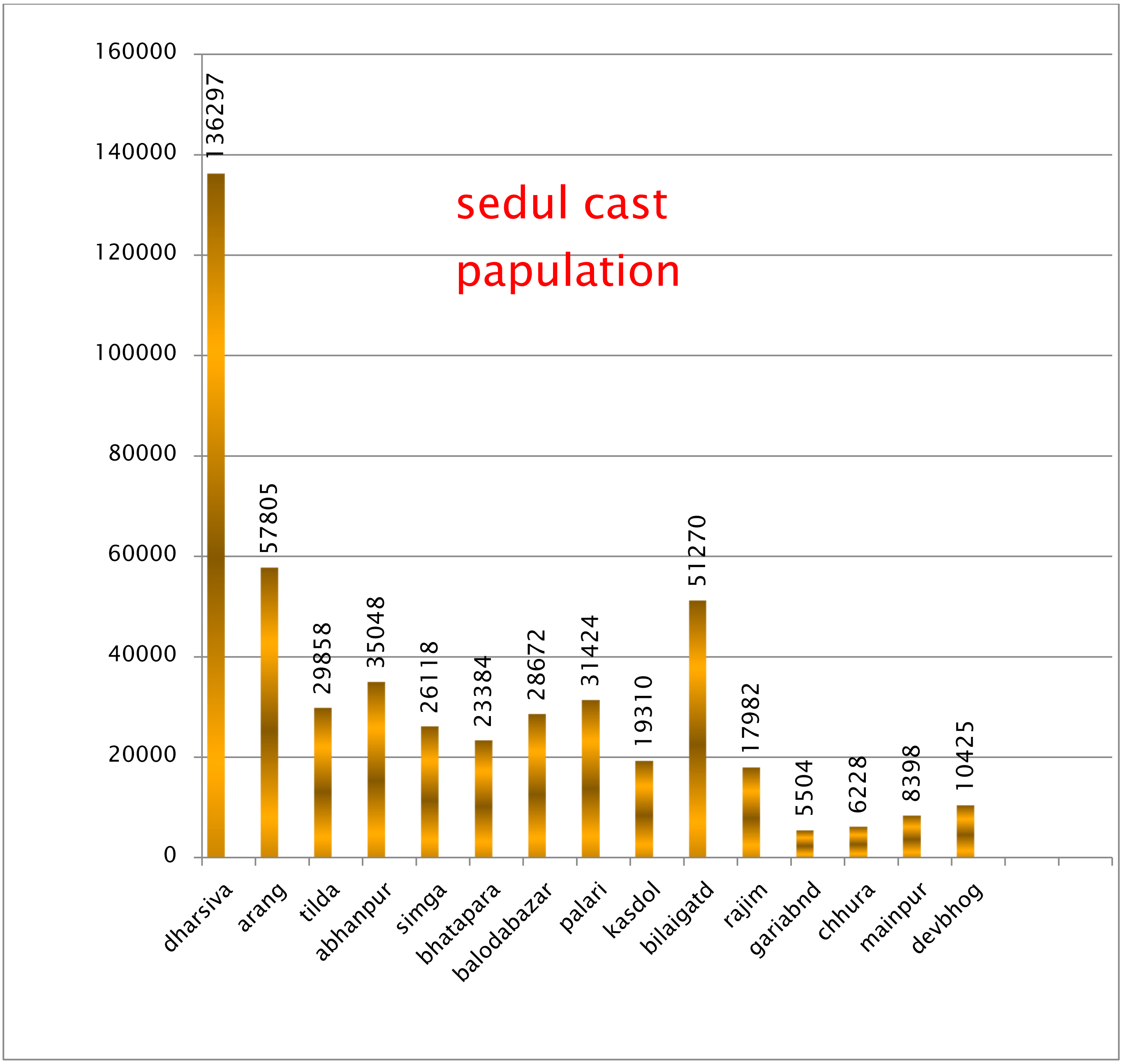
sedul cast
papulation
160000
140000
120000
100000
80000
60000
40000
20000
0
136297
57805
29858
35048
26118
23384
28672
31424
19310
51270
17982
5504
6228
8398
10425
dharsiva
arang
tilda
abhanpur
simga
bhatapara
balodabazar
palari
kasdol
bilaigatd
rajim
gariabnd
chhura
mainpur
devbhog

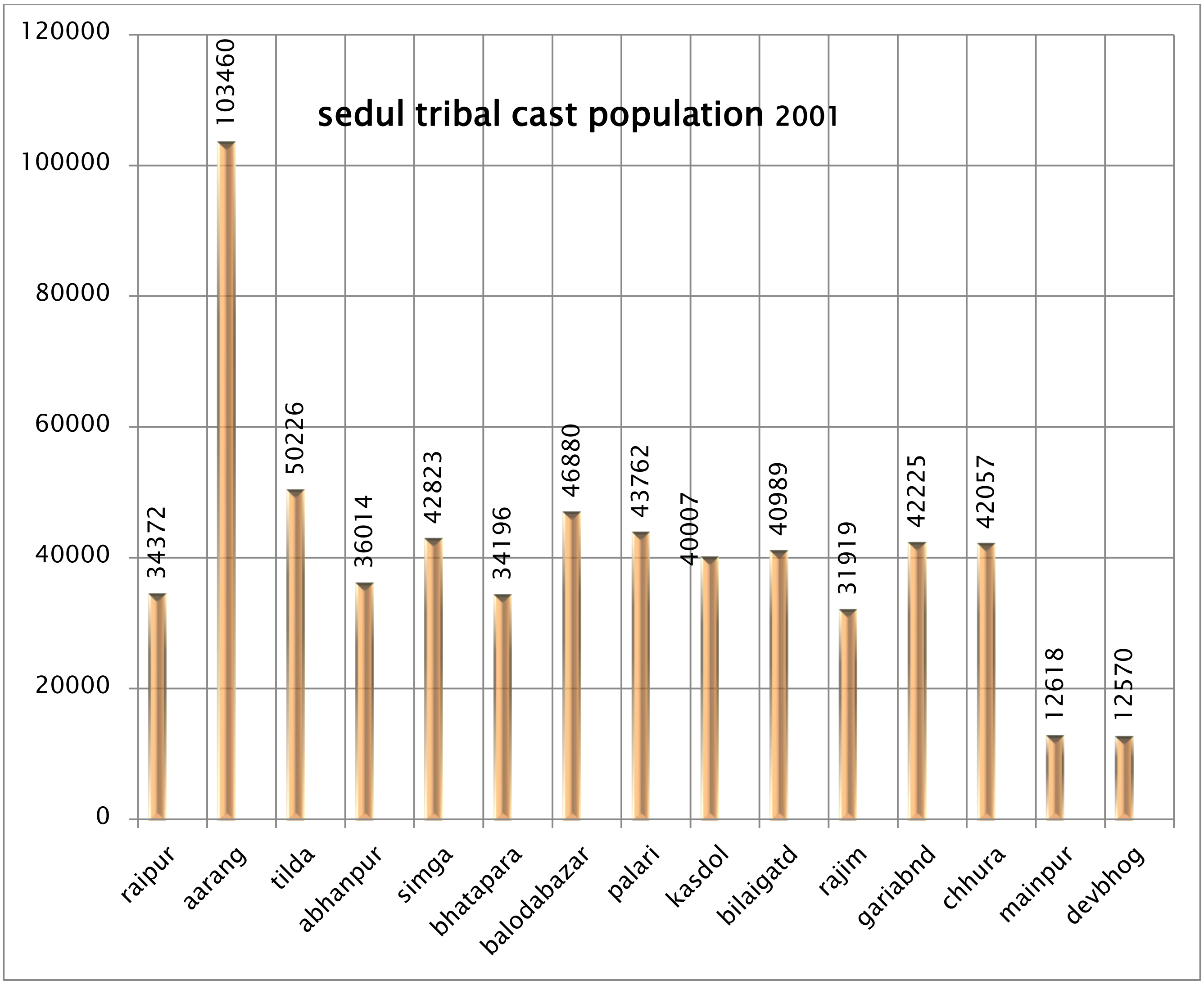

3.10 परिवहन :–

यदि कृषि तथा उद्योग को किसी क्षेत्र का शरीर व अस्थियाँ माना जाए तो यातायात के साधन निःसंदेह इस क्षेत्र के धमनियों के समान है, किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास में परिवहन का जितना महत्व है, उतना ही यह सांस्कृतिक व राजनैतिक उत्थान के लिए भी महत्वपूर्ण है।

बलौदाबाजार जिलें में ब्रिटीश काल के पहले बैलगाड़ी तथा पैदन रास्ता ही यातायात के प्रमुख साधन थे। 19वीं शताब्दी के पूवार्द्ध तक अध्ययन क्षेत्र में परिवहन के साधनों का अभाव था

केवल कुछ सड़क मार्ग इस क्षेत्र को आपस में जोड़ते थे, वर्तमान में इसका विकास हो रहा है। विकास क्रम के अंतर्गत कच्ची व पक्की सड़कों का निर्माण किया जा रहा है अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों का द्रुतगति से विकास हो रहा है। फलस्वरूप परिवहन के साधनों के विकास में तेजी आयी है। बलौदाबार जिले में मुख्यतः यातायात के दो साधन –

1. रेल यातायात
2. सड़क यातायात

1. रेल यातायात :–

रेल यातायात में मुंबई से कलकत्ता जाने वाली दक्षिण पूर्वी रेलमार्ग का अध्ययन क्षेत्र का एक मात्र मार्ग है।

2. सड़क परिवहन :–

अध्ययन क्षेत्र में दो प्रकार के सड़क मार्ग मिलते है

(अ) कच्ची सड़क

(ब) पक्की सड़क

अ) कच्ची सड़क :–

अध्ययन क्षेत्र में कच्ची सड़कों का जाल सा बिछा हुआ है। प्रत्येक गाँव एक–दूसरे से कच्ची सड़कों से सम्बद्ध है। सर्वेक्षित गाँवों में कच्ची सड़क भी दो प्रकार के मिलते है :–

(1) कांक्रीट से निर्मित सड़क

(2) बिना कांक्रट से निर्मित सड़क

(ब) पक्की सड़क :–

पक्की सड़क अध्ययन क्षेत्र में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 2 कि.मी. की दूरी से रिंग रोड बलौदाबाजार से जूड़ी हुई है।

लिंग संरचना :–

जनांकिकीय संरचना में आयु एवं लिंग की भूमिका विशेष महत्व रखती है। व्योंकि ये किसी क्षेत्र की जनसंख्या के आयु संघटन एवं अर्थव्यवस्था के सहसंबंध को सुन्दर रूप से व्यक्त करते है। (लेलेन्ट 1978)

लिंगानुपात का प्रभाव अन्य जनसांख्यिकीय तत्वों एवं जनसंख्या वृद्धि विवाह दर व्यवसायिक संरचना पर पड़ता है (थ्रियांक 1976)

ट्रिवार्था (1993) के अनुसार – किसी भी क्षेत्र के भौगोलिक विश्लेषण में लिंगानुपात महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यह न केवल स्थल स्वरूप का एक महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। इस प्रकार क्षेत्रीय स्थल स्वरूप के विश्लेषण में यह एक अतिरिक्त माध्यम का कार्य करता है।

जनसंख्या को लिंग आधार पर पुरूष वर्ग एवं स्त्री वर्ग में बांटा जा सकता है। स्त्री जनसंख्या का पुरूष जनसंख्या से अनुपात या पुरूष जनसंख्या का स्त्री जनसंख्या से अनुपात द्वारा लिंग अनुपात की जानकारी प्राप्त की जाती है। भारतीय जनसंख्या जनगणना में स्त्री जनसंख्या को अंश और पुरूष जनसंख्या को हर माना गया है। अन्य शब्दों में भारत वर्ष में प्रति हजार पुरूषों के पीछे स्त्रियों की संख्या ज्ञात की जाती है।

सूत्र रूप में

ैमग तंजपव त्र **डइफ×ा वत फ्उ×ा**

यहाँ उ त्र पुरूष जनसंख्या, ि त्र स्त्री जनसंख्या तथा ा त्र गुणांक आपका मूल्य 100 या 1000 होता है।

लिंग अनुपात को जनसंख्या के किसी विशेष वर्ग के लिए भी ज्ञात किया जा सकता हैं। उस दशा में स्त्री और पुरूष जनसंख्या उस वग्र विशेष के संबंध में होनी चाहिए।

सूत्र रूप में

ैमग तंजपव त्र **पिइउ×ा**

यहाँ पर प का अर्थ देश के किसी विशेष भाग या किसी आयु वर्ग से लगाया जाता है।

आयु संरचना :–

आयु संरचना से तात्पर्य किसी समय विशेष पर जनसंख्या को आयु के अनुसार वर्गीकृत करना है कि किस आयु वर्ग में जनसंख्या का प्रतिशत कितना है। अतः आयु संरचना विभिन्न आयु वर्गों में सापेक्षित आकार की व्याख्या करती है।

आयु संरचना प्रजनन दर, मृत्युदर प्रपात और श्रमशक्ति का सूचक होता है, क्यों कि जनसंख्या की आयु संरचना मूलतः इन्ही तीनों द्वारा निर्धारित होती है आयु संरचना से बच्चों की संख्या, क्रियाशील जनसंख्या का अनुपात तथा अक्रियाशील तथा आश्रित आश्रित जनसंख्या का ज्ञान होता है। इसी के आधार पर जनसंख्या वृद्धि दर तथा जनसंख्या का पूर्वानुमान लगाया जाता है। बलौदाबाजार जिले नवगठित जिला है, इसके पूर्व बलौदाबाजार तहसील थी जिसमें 2002–01 में आयु संरचना इस प्रकार थी।

तालिका 3.7 आयु संरचना :–

क्र.	आयु समूह	पुरूश कुल जनसंख्या	महिला कुल जनसंख्या
1	0–14	42.83	41.80
2	15–19	7.94	7.73
3	20–24	6.82	7.06
4	25–29	7.41	7.75
5	30–39	13.65	12.84
6	40–49	9.28	9.04
7	50–59	6.24	5.29
8	60 से अधिक	5.13	5.79

स्त्रोत – सांख्यकीय कार्यालय बलौदा बाजार

तलिका 3.8 साक्षरता का प्रतिशत

जिला / तहसील	ग्रामीण			नगरीय			योग		
	पुरूष	स्त्री	योग	पु	स्त्री	योग	पुरूष	स्त्री	योग
सिमगा	81.69	52.78	67.11	84.39	58.08	71.38	81.96	53.29	67.5.3
भाटापारा	78.39	45.42	61.69	86.33	6450.	75.57	81.35	52.30	66.78
बलौदाबाजार	80.57	45.05	62.60	89.64	70.06	80.07	82.05	48.91	65.37
पलारी	81.82	49.73	65.25	0.00	0.00	0.00	81.72	49.73	65.25
कसडोल	***79.00***	42.76	60.60	0.00	0.00	0.00	79.00	42.76	60.60
बिलाईगढ़	*75.92*	41.28	58.15	86.82	54.21	69.96	76.43	41.93	58.75
बलौदाबाजोर	79.41	45.79	62.30	86.82	64.05	75.06	80.25	47.76	63.78

तलिका 3.9 शैक्षणिक संस्थाओं में शिक्षकों की संख्या

क्र.		प्राथ. विद्या	माध्य. विद्याल	हाई स्कू	उच्चत्तर	महाविद्यालय	व्यवसायिक संस्थाएं	अन्य संस्थ

		लाय	य	ल	माध्यिमक			ााएं
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	2006—07	400	200	5	46	162	453	छं
2	2007—08	422	242	10	72	185	559	छं
3	2008—09	455	236	16	50	169	458	छं
4	2009—10	483	392	24	76	169	540	दं
5	2010—11	14027	7524	140 2	2910	489	830	126

तालिका क्रमांक 3.10

बलौदा बाजार तहसील में जन्मदर एवं मृत्युदर (2002—2001)

क्र.	वर्श	मृत्युदर	प्रतिशत
1	1991	3720	630
2	1992	2600	543
3	1993	2984	6969
4	1994	2776	905
5	1995	3820	918
6	1996	3548	993
7	1997	3773	845
8	1998	4765	850

9	1999	7056	1066
10	2000—2001	7178	1102

स्त्रोत — पुलिस थाना बलौदा बाजार

3.11 उद्योग धंधे एवं कृशि :—

बलौदाबाजार जिला कृषि प्रधान क्षेत्र है। अतः यहाँ के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। बलौदा बाजार जिले का कुल क्षेत्रफल लगभग 3593 वर्ग किलोमीटर है जिसमें 75 प्रतिशत क्रियाशील जनसंख्या प्रत्यक्ष कृषि पर निर्भर है।

बलौदाबाजार जिले में कृषि के अलावा सीमेंट उद्योग जैसे — लफार्ज सीमेंट, सोनाडीट, अबूंजा सीमेंट खान, ग्रासीम सीमेंट रायन आदि सीमेंट उद्योग है क्योंकि इन क्षेत्रों में चूना पत्थर अधिक मात्रा में पायी जाती है और इन उद्योगों से लोगों को रोजगार प्रदान किया है साथ ही बलौदाबाजार जिले में चाँवल कारखाना, पोहा कारखानों, बिस्किट कारखाना आदि है जिससे नवगठित बलौदाबाजार जिले का विकास तेजी से हो रही है।

इसको अतिरिक्त जिन क्षेत्रों में उद्योग धंधे एवं उन्नत कृषि व्यवसाय है उस क्षेत्र में जनसंख्या की वर्ष भर रोजगार उपलब्ध रहते है, जिन क्षेत्रों में उद्योग धंधे एवं कृषि का विकास नहीं पाया है वहाँ पर महीनों तक काम नहीं मिलता, जिसके कारण वहाँ की गरीबी मजदूरों को अन्य क्षेत्रों में प्रवास करना पड़ता है।

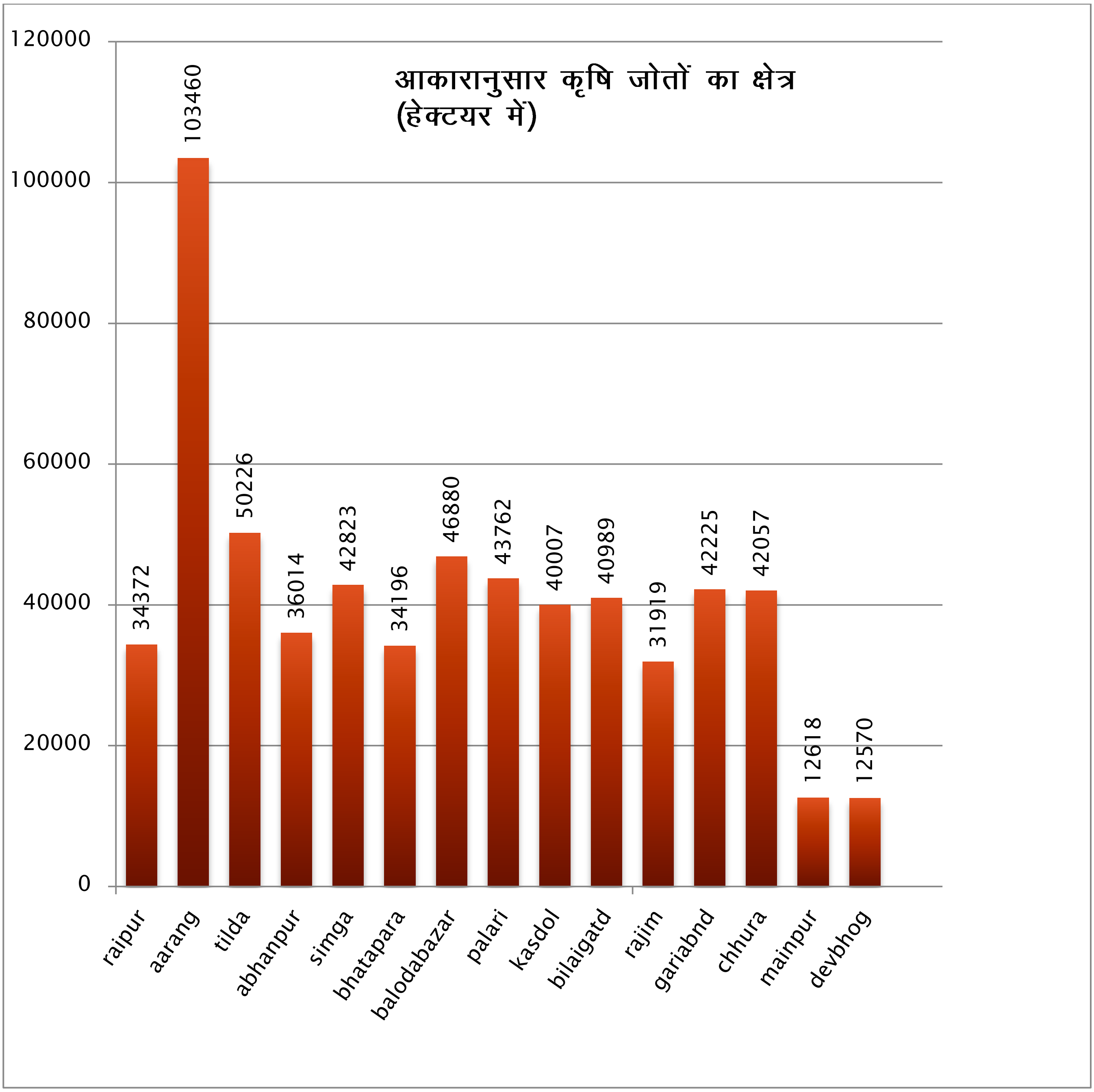

आकारानुसार कृषि जोतों का क्षेत्र
(हेक्टयर में)
120000
100000
80000
60000
40000
20000
0
34372
103460
50226
36014
42823
34196
46880
43762
40007
40989
31919
42225
42057
12618
12570
raipur
aarang
tilda
abhanpur
simga
bhatapara
balodabazar
palari
kasdol
bilaigatd
rajim
gariabnd
chhura
mainpur
devbhog

3.11 फसलों का क्षेत्रफल हेक्टयर में

क्र.	जिला / तहसील					
1	थ्समगा	3289	7627	39081	49099	10018
2	भाटापारा	1905	4850	30198	38461	8263
3	बलौदाबाजार	2157	3522	42314	55077	12763
4	प्लारी	1156	1434	43703	58141	14438
5	क्सडोल	1163	2229	37797	42264	4467
	ब्लाइग	1322	577	40174	42561	2387
7	बलौदाबाजार	10992	20239	233267	285603	52336

स्त्रोतः अधीक्षक भू–अभिलेख

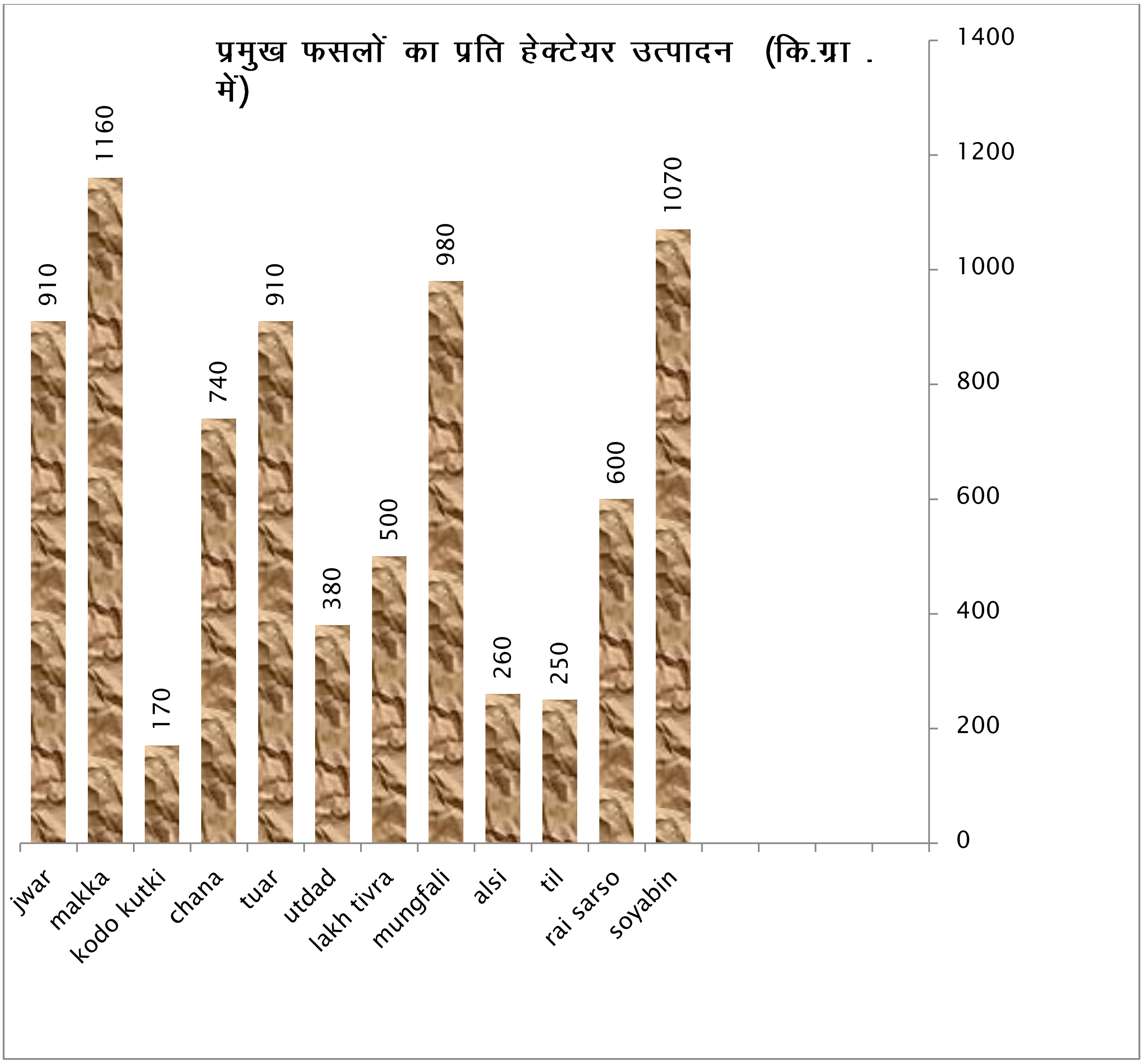
प्रमुख फसलों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन (कि.ग्रा . में)
1400
1200
1000
800
600
400
200
0
910
1160
170
740
910
380
500
980
260
250
600
1070
jwar
makka
kodo kutki
chana
tuar
utdad
lakh tivra
mungfali
alsi
til
rai sarso
soyabin

तलिका 3.12 पशुधन एवं कुक्कुट

क्र.	जिला / वर्ष	गाय			योग	भैंस			योग
		3वर्ष से अषिक उम्र के नर	3वर्ष से अषिक उम्र के मादाएं	बछड़े / बछिया		3वर्ष से अषिक उम्र के नर	3वर्ष से अषिक उम्र के मादाएं	पड़वा / पड़िया	
1	सिमगा	17404	21961	27211	66576	8171	4956	6495	19625
2	भाटापारा	4670	12290	14108	31068	5094	2123	2251	9468
3	बलौदाबाजार	18915	27358	33917	80190	15011	2358	3166	20535
4	पलारी	24347	26330	29542	80219	12835	5684	6191	24710
5	कसडोल	20574	24886	23411	68871	14291	1743	1822	17856
6	बिलाईगढ़	18121	16443	11279	45843	13069	639	702	14410
	बलौदाबाजार	104031	129268	139468	372767	68471	17503	20627	106604

स्त्रोतः अधीक्षक भू–अभिलेख

सर्वेक्षित ग्राम रसौटा का परिचय

ग्राम पंचायत रसौटा बलौदाबाजार जिले पलारी विकास खण्ड अंतर्गत आता है। जो की पलारी से 3 कि.मी. की दूरी पर दक्षिण की ओर है एवं बलौदा बाजार जिले से 13 कि.मी. की दूरी पर दक्षिण की ओर स्थित है। बलौदा बाजार जिला के अतंगर्त 6 ब्लॉक आते है जो पलारी ब्लाक के अंतर्गत ग्राम पंचायत रसौटा भी शामिल है जो विकास की दृष्टि से सामान्य है।

पलारी ब्लाक नवगठित बलौदा बाजार जिले का सबसे बड़ा सिंचित सिंचाई क्षेत्र है जिसका कुल अनुबंधित रकबा 33094 हेक्टेयर सिंचित रकबा हेक्टेयर है। जिले के 60848 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई की जा रही है। वर्ष 2012 में सिंचाई रकबे में 8603 हेक्टेयर क्षेत्र की वृद्धि हुई है। जो रविशंकर सागर गंगरेल बांध की महानदी मुख्य नहर की शाखा है।

बलौदा बाजार जिले के पलारी ब्लाक के अंतर्गत ग्राम पंचायत रसौटा का अपना अलग ही भूमिका है। पलारी ब्लाक में सबसे प्रसिद्ध प्राचीन कालीन सिद्धेश्वर मंदीर है जो छःमासी रात में बनाई गयी थी। 7–8वी शताब्दी में यह सिद्धेश्वर मंदिर 6 महीने की रातों में बनाई गयी थी ऐसा लोगों का मानना है।

ग्राम पंचायत रसौटा के ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय कृषि है, जहॉ रबी और खरीफ दोनो फसल लिया जाता है। यहां के किसान ज्यादातर धन की खेती करते है। धान की किस्में – सूचना, एच. एम.टी. 1010,1001, महामाया आदि। इसके अलावा गेंहू, चना, तुवर, आदि की खेती थी यहां के किसान करते है। यहां के किसानों को खेती के लिए मानसून पर निर्भर रहना पड़ता है परन्तु कुछ बड़े किसान भी है, जिसके पास स्वयं के सिंचाई के साधन है जैसे– बोरपेल, कुंआ आदि।

ग्राम पंचायत रसौटा ग्रामीण परिवेश होते हुए भी शिक्षा, कृषि, व्यवसाय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियां के कारण अपना भिन्न अस्तित्व रखता है। ग्राम पंचायत रसौटा में धार्मिक आस्था के रूप में शिव मंदिर, हनुमान मंदिर, शीतला मंदिर है जो सभी वर्ग समुदाय के लोग भेदभाव रहित मिल–जुलकर पूजा अर्चना करते है और श्रद्धा निष्ठा के साथ ईश्वर के प्रति भक्ति प्रकट करते हैं।

कुल रकबा

ग्राम पंचायत रसौटा का कुल रकबा 560 हेक्टेयर है।

जनसंख्या

ग्राम पंचायत रसौटा कि कुल जनसंख्या 2011 के अनुसार 2245 है। जिसमें पुरूषों व महिलाओं की संख्या क्रमशः 1148व 1097 है। जिसमें कुल मतदाताओं की जनसंख्या 1399 है।

सामाजिक स्थिति

ग्राम पंचायत रसौटा में अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के लोग निवासरत् है। कुल जनसंख्या में अन्य पिछड़ा वर्ग के लोगों कि संख्या अधिक है। अनुसूचित जाति की जनसंख्या कुल जनसंख्या में कम है ,और वहीं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या के अंतर्गत केवल 2 परिवार आते है। ग्राम पंचायत रसौटा में सामान्य वर्ग के कोई नहीं है।

तालिका 3.13 ग्राम पंचायत रसौटा की अधोसंरचना

क्र.	अधोसंरचना का नाम	रसौटा
1.	सरकारी तालाब	6
2.	निजी तालाब	–
3.	सरकारी कुंआ	2
4.	निजी कुंआ	33
5.	हैंडपंप	9/
6.	आंगनबाड़ी भवन	2
7.	पंचायत भवन	1
8.	प्राथमिक शाला/माध्यिमिक शाला	2
9.	सामुदायिक भवन	2
10.	मंगल भवन	–
11.	अम्बेडकर भवन	1

स्त्रोत – ग्राम पंचायत कार्यालय

ग्राम पंचायत रसौटा में कुल जनसंख्या में 1452 लोग शिक्षित है तथा 793लोग अशिक्षित है। ग्राम पंचायत रसौटामें कुल साक्षर महिलाओं कि संख्या 487 है और वहीं पुरूषों कि संख्या 965 है।

तालिका 3.14 ग्राम पंचायत रसौटा के पदाधिकारियों की सूची

क्र.	पदाधिकारियों का नाम	पद	वार्ड क्रमांक
1.	कुमारी बाई फेकर	सरपंच	
2.	नरेन्द्र डहरिया	उपपसरपंच	
3.	माखन साहू	रोजगार सचिव	
4.	सुरेश साहू	पंच	1
5.	सेन कुवंर	प्ंच	2
6.	पार्वती रजक	पंच	3
7.	जेठिया बाई धीवर	पंच	4
8.	सरस्वती यादव	पंच	5
9.	लक्ष्मन्तीन वर्मा	पंच	6
10.	हरिशंकर साहू	पंच	7
11.	गोवर्ध्दन साहू	पंच	8
12.	रत बाई साय	पंच	9

13.	नरेन्द्र डहरिया	पंच	10
14.	पुन्नी बाई डहरिया	प्ंच	11
15.	मन्नू बाई बंजारे	पंच	12
16.	अंजोर दास	प्ंच	13
17.	श्राजकुमार घृतलहरे	प्ंच	14

स्त्रोत – ग्राम पंचायत कार्यालय

ग्राम पंचायत रसौटा की विभिन्न सुविधाएँ

पेयजल

ग्राम पंचायत रसौटामें 19 हैण्डपंप है जो पेयजल के लिए पर्याप्त है और 35 निजी घरों में कुंआ है साथ–ही–साथ 2 सरकारी कुंआ भी है। सरकारी तालाब व निजी तालाबों की कुल संख्या 13 है जिसमें सभी निस्तारी आसानी से होती है।

शिक्षण व्यवस्था

ग्राम पंचायत रसौटा में शासकीय प्राथमिक शाला कि संख्या 2 है। हाईस्कूल व हायर सेकेण्डरी के शिक्षा हेतु गाँव से 1 कि.मी. ग्राम कोसमंदी जाते है।

आंगनबाड़ी

ग्राम पंचायत रसौटामें कुल आंगनबाड़ी भवनों की संख्या 2 है।

राशन दुकान

ग्राम पंचायत रसौटामें राशन दुकान है जहाँ से ग्रामीण लोगों को चाँवल, गेंहूँ, शक्कर, मिट्टीतेल आदि प्राप्त होता है।

सिंचाई सुविधा

ग्राम पंचायत रसौटाके किसानों को कृषि के लिए ज्यादातर मानसून पर निर्भर रहना पड़ता है, परन्तु अधिकांश कृषकों के पास खुद का सिंचाई के साधन है जैसे :– ट्यूबबेल, कुंआ आदि जिससे वे अपना कृषि कार्य करते है और साल में दो फसल रबी और खरीब लेते है।

कृशि

ग्राम पंचायत रसौटामें धान यहाँ कि मुख्य फसल है और यहाँ के किसान ज्यादातर धान की खेती करते हैं। यहाँ के लोग धान के विभिन्न किस्मों की खेती करते हैं जैसे – सरना, एच.एम.टी.ए 1010, 1001, आदि। धान के अलावा यहाँ के किसान गेंहूँ, चना, तुवर आदि की खेती भी करते हैं।

यातायात

ग्राम पंचायत रसौटामें यातायात की सुविधा सामान्य है। गाँव की गलियों कि सड़क क्रांक्रिटिकरण किया जा चुका है।

डाकघर

ग्राम पंचायत रसौटामें डाकघर नहीं है, गाँव से 1 कि.मी. से लगा हुआ ग्राम पंचायत कोसमंदी में पोस्ट आफिस है।

ग्राम पंचायत रसौटा की प्रमुख समस्याएँ

ग्राम पंचायत रसौटा में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत सरकार द्वारा 100 दिन का काम उपलब्ध नहीं कराया जाता है। जिससे गाँव के अधिकांश मजदूर

वर्गों को अत्यंत परेशानियाँ होती ही रहती है। साथ–ही–साथ गाँव के लोग गाँव को छोड़कर शहरों कि तरफ पलायन करने को मजबूर है। ग्राम पंचायत रसौटामें बिजली की समस्या रहती है।

ग्राम पंचायत रसौटाके गलियों में पानी के निकासी के लिए नाली की भी व्यवस्था नहीं है। घरों का पानी सड़क में बहते रहता है। बरसात के मौसम में तो समस्या और ज्यादा बढ़ जाती है जिससे फैलने की संभावना हमेशा बनी रहती है। गंदगी फैली रहती है जिसके कारण गाँव के लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है और बीमारी

ग्राम पंचायत रसौटा में पेयजल के साधन होते हुए भी लोगों को हमेशा पेयजल की सुविधा प्राप्त नहीं हो पाती है। गर्मी के मौसम में ग्राम के अधिकांश तालाब व कुंआ सूख जाया करते हैं तथा बहुत से हैण्डपंप खराब हो चुके है जिसे प्रशासन द्वारा अभी तक ठीक नहीं किया गया है।

ग्राम पंचायत रसौटामें विभिन्न जाति समुदाय के लोग निवास करते है जिस कारण राजनीतिक रूप में विभिन्न पार्टियों का समर्थक है खासकर कांग्रेस और भाजपा पार्टी के समर्थक अधिक मात्रा में है जो चुनावी मौसम में अपने अपने पार्टी का समर्थन करते हैं।

ग्राम पंचायत रसौटा मुख्य मांर्ग से गाँव पहुंचने के लिए मात्र कच्चा सड़क बना हुआ है तथा बरसात में कच्चा सड़क में पानी भर जाता है जिसके कारण आवागमन में असुविधा होती है

अध्याय– 4

4.1 उपभोग प्रवृत्ति पर पारिवारिक बजट का बदलता स्वरूप का प्रभाव

परिवारिक बजट पारिवारिक धन के समुचित व्यवस्थापन का प्रथम चरण है। पारिवारिक बजट से हमें एक परिवार की पारिवारिक संरचना, सदस्यों की आयु, आर्थिक स्थिति, परिवार की प्राथमिकताएँ, जीवन स्तर, अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन लक्ष्य, बचत प्रवृत्ति आदि के संबंध में कई महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती हैं।

वर्तमान में आर्थिक उदारीकरण, भूमण्डलीकरण, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एवं आधुनिक जीवन शैली ने ग्रामीण भारत के पारिवारिक बजट को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। मोबाइल, सी.डी.प्लेयर, कम्प्यूटर, फ्रीज, प्रेस, कूकर, वाशिगं मषीन, जीपीआरएस, ब्लूटूथ, दो पहिया वाहन आदि ग्रामीण समाज में इस प्रकार घुल–मिल गये हैं कि ग्रामीण परिवारों की जीवनचर्या देखते–देखते बदल गयी है।

गॉवों में षिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पषुपालन, मछलीपालन, रोजगार संबंधी अद्यतन जानकारियों की सहज पहूॅच हो गयी है। हरित क्रांति, ष्वेत क्रांति एवं लैब टू लैण्ड (प्रयोगषाला से खेत तक) तकनीक के हस्तांतरण से किसानों को लाभ हुआ है। इंटरनेट के माध्यम से भी ग्रामीणों को उनके कृषि उत्पाद, सब्जी, फल, अनाज, दाल, तिलहन, हरे चारे आदि के विक्रय एवं विपणन में सुविधा हो गयी है।

इससे एक ओर ग्रामीण परिवारों को प्रत्यक्ष रोजगार और आय बढ़ाने का अवसर मिला है, वहीं दूसरी ओर उनके उपभोग की प्रवृत्ति में भी व्यापक बदलाव परिलक्षित हो रहे हैं।

ऊर्जा के पारम्परिक एवं अपारम्परिक स्त्रोत का प्रयोग निरन्तर बढ़ता जा रहा है। परिणामस्वरूप ऊर्जा संरक्षण एवं उसका विवेकपूर्ण उपभोग अत्यावष्यक हो गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से ऊर्जा के परिपेक्ष्य में ग्रामीण भारत में पारिवारिक बजट के बदलते स्वरूप को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

धन व्यक्ति और परिवार के सुख और संतोष का मुख्य आधार है। धन से परिवार को अधिकतम संतुष्टि तभी मिल सकती ह जबकि धन का समुचित व्यवस्थापन किया जाये। पारिवारिक बजट धन के व्यवस्थापन का प्रथम चरण है। यह पारिवारिक धन का समुचित आयोजन है। पारिवारिक बजट में एक निष्चित अवधि के लिये एक परिवार की आय और व्यय का अनुमानित विस्तृत विवरण होता है। पारिवारिक बजट में हमें एक परिवार की पारिवारिक संरचना, सदस्यों की आयु, आर्थिक स्थिति, परिवार की प्राथमिकताएॅ, जीवन स्तर, अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन लक्ष्य, बचत प्रवृत्ति आदि के संबंध मे कई महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती हैं।

परिवार की आय चाहें कितनी भी अधिक क्यों न हो वह आवष्यकताओं को देखते हुये कम ही रहती है। अतः जब तक उसे परिवार के सदस्यों की आवष्यकताओं का ध्यान रखते हुये उचित ढंग से व्यय नही की जायेगा, तब तक परिवार के सदस्यों की संतुष्टि कठिन कार्य होती है। अतः

बजट के माध्यम से पूर्व से ही आय के संभावित स्त्रोत्रों को ध्यान में रखकर व्यय की योजना बनाना बना ली जाती है। बजट की सहायता से परिवार में सम–सीमान्त नियम का पालन करते हुये अपनी आय से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने का प्रयास किया जा सकता है।

वर्तमान में आर्थिक उदारीकरण, भूमण्डलीकरण, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एवं आधुनिक जीवन शैली ने ग्रामीण भारत के परिदृष्य को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

गॉवों में षिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पषुपालन, मछलीपालन, रोजगार संबंधी अद्यतन जानकारियों की सहज पहॅुच हो गयी है।

मोबाइल, सी.डी.प्लेयर, कम्प्यूटर, फ्रीज, कूकर, वांषिग मषीन, जीपीआरएस, ब्लूटूथ, दो पहिया वाहन आदि ग्रामीण समाज में इस प्रकार घुल–मिल गये हैं कि ग्रामीण परिवारों की जीवनचर्या देखते–देखते बदल गयी है।

हरित क्रांति, श्वेत क्रांति एवं लैब टू लैण्ड (प्रयोगषाला से खेत तक) तकनीक के हस्तांतरण से किसानों को लाभ हुआ है। इंटरने के माध्यम से भी ग्रामीणों का उनके कृषि उत्पाद, सब्जी, फल, अनाज, दाल, तिलहन, हरे चारे आदि के विक्रय एवं विपणन में सुविधा हो गयी है।

ग्रामीणों ने अपनी जरूरतों के हिसाब से प्रौद्योगिकी को ढाल लिया है। यहॉ तक की पंजाब में वाषिंग मषीन से दूध से मक्खन निकालने जैसे प्रौद्योगिकी के अप्रत्याषित प्रयोग भी सामने आ रहे है।

इससे एक ओर ग्रामीण परिवारों को प्रत्यक्ष रोजगार और आय बढ़ाने का अवसर मिला है, वहीं दूसरी ओर उनके आचार–विचार, रहन–सहन एवं खान–पान का स्तर बढ़ा है,

जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव ग्रामीण भारत में पारिवारिक बजट में भी परिलक्षित हो रहा हैं।

4.2 उपभोग प्रवृत्ति पर ग्रामीण पारिवारिक बजट एवं आधुनिकीकरण का प्रभाव

यह सर्वमान्य सत्य है कि हमारे देष के प्राण गांवो में बसते हैं, अर्थात् गांव ही वह आधार है जिस पर देष प्रगति कर रहा है। इसलिए यह आवष्यक हो जाता है कि देष के बजट मे गांवों से संबंधित परियोजनाओं को विषेष महत्व दिया जाय।

यह निष्चित है कि बजट चाहे वह केन्द्र सरकार का सालाना बजट हो या सामान्य पारिवारिक बजट, हमारे आर्थिक जीवन को कई प्रकार से प्रभावित करता है, यह अलग बात है कि उसका सही ऑकलन कर पाना या उस प्रभाव को सही तरीके से महसूस कर पाना हमारे लिए अब तक पूरी तरह संभव नहीं हो पाया है। यह बजट हमारे रहन सहन एवं हमारी जीवन प्रवृत्तियों को निरंतन प्रभावित करता है।

वैष्वीकरण के प्रभावों से आज हमारा सामान्य जीवन तेजी से प्रभावित हो रहा है। उपभोक्ता वस्तुओं की आई बढ़ स उपभोग प्रवृत्ति में सन् 1991 से तेजी से वृद्धि हुई है। हमारे जीवन पर आधुनिक तकनीकों एवं सुविधाओं ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। तकनीकें एवं सुविधाएॅ न केवल षहरी जीवन वरन् ग्रामीण जीवन को भी द्रुतगति प्रभावित कर रही हैं।आधुनिकीकरण एवं ग्रामीण परिवेष –

दूरदराज इलाके का एक गांव, टूटी सड़क, अषुद्ध पानी, बिजली का कोइ नामोनिषान नहीं। कोसों दूर डॉक्टर, मीलों दूर स्कूल, बाजार का अतापता नहीं। कल्पना कीजिए इसी गांव की दूसरी तस्वीर की । एक किसान को अपना माल बाजार में बेचना है, वह गांव में ही पता लगा है` पाएगा, विडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिये या बेव कैमरा की मदद से। यदि अचानक किसी की तबियत खराब हो जाती है तो उन्हें स्वास्थ्य सुविधाएॅ तुरंत उपलब्ध हो जाती है। परन्तु यह भारत के हर गांव की तस्वीर नहीं है परन्तु आधुनिकीकरण भारतीय ग्रामीण जीवन की ओर अपने पग बढ़ा रहा चुका है और गांव भी इसके स्वागत के लिए तैयार हो रहे हैं। एक नवीन आधुनिकीकरण ग्रामीण जीवन की षुरूआत हो चुकी है।

यह आधुनिकीकरण का ही प्रभाव है कि आज देष के कृषक कृषि की नवीन एवं उन्नत तकनीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं। केवल इतना ही नही नैनो तकनीक का इस्तेमाल फसलों में पनपने वाली बीमारियों की समय रहते पहचान, उनका त्वरित निदान और क्षेत्रवार पर्यावरण की

पहचान करने में सफलता पूर्वक किया जा रहा है। जिससे फसलों और खाद्य सामग्रियों/उत्पादों की सुरक्षित रखा जा सकता है। यही नहीं देष के खाद्यन्न उत्पादन मे रिकार्ड तोड़ वृद्धि भी उन्नत एवं आधुनिक तकनीकों के उपयोग का परिणाम है। वास्तव में आज ग्रामीण जीवन के तस्वीर बदल रही है। आज गांवों में दूरसंचार सेवाओं का भी विकास हो रहा है, मोबाइल सेवाओं का उपयोग भी ग्रामीण जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। आज गांवों में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति चाहे वे कृषक हो या मजदूर हो सभी के पास मोबाइल फोन अवष्य होता है। आज देष के दूर दराज के छोटे छोटे गांवों मे भी अन्य दूरसंचार सेवाओं का भी तेजी से विस्तार हो रहा है। जैसे ब्रांडबैंड, टेलीमेडिसिन, कम्प्युटर आदि।

आधुनिकीकरण से ग्रामीण जीवन के उपभोग प्रवृत्ति में और भी अनेक परिवर्तन हुए हैं। एक कार कंपनी सर्वेक्षण के अनुसार उसके उपभोक्ताओं में 34 प्रतिषत ग्रामीण उपभोक्ता है। वहीं हीरो होण्डा बाइक के सर्वेक्षण के अनुसार प्रतिवर्ष उनके उपभोक्ताओं में ग्रामीणों की संख्या बढ़ती जा रही है। ग्रामीण रहन–सहन एवं जीवनस्तर तेजी से बदल रहा है।

यही नहीं आज गांवों में न केवल पुरूष वरन् महिलॉए भी बचत एवं वित आदि विषयों में रूचि लेने लगी है। कई गांवों में महिला स्वसहायता समूह बनाकर अपनी बचत की रााषि जमा कर कोइ्र छोटा मोटा व्यवसाय कर रही है। पंचायतों में भी आज महिलाओं का दखल तेजी से बढ़ रहा है। केवल ग्रामीण पुरूष ही नहीं वरन् महिलाएँ भी नवीन तकनीकों का उपयोग बढ़ चढ़ कर कर रही है। उदाहरण के लिए उनके खाना बनाने के चूल्हों का स्थान आज गैस सिलंडरों ने ले लिया है। आज गांवो में बैंकिग सुविधाओं का तेजी से विकास हो रहा है और ग्रामीण ई–बैंकिंग एवं ए.टी. एम. जैसी सुविधाओं का भी उपयोग करने लगे हैं

।

चूंकि 21वीं सदी आधुनिकता एवं वैष्वीकरण की सदी है। और इस आधुनिकीकरण ने न केवल षहरी वरन् ग्रामीण जीवनस्तर को भी तेजी से प्रभावित किया है। इसी आधुनिकीकरण की वजह से ही आज गांवों के लोग अपने पारिवारिक बजट में नवीन तकनीकों एवं सुविधाओं के व्यय को भी स्थान दे रहे हैं। आधुनिकीकरण के कारण देष की उपभोग प्रवृत्ति में एक क्रांति आ गई है और यह क्रांति अब ग्रामीण जीवन को भी प्रभावित कर रही है और ग्रामीण जीवन का आधार मजबूत होने लगा है ग्रामीण अर्थव्वयस्था में सुधार ग्रामीण पारिवारिक बजट को और ज्यादा प्रभावित कर सकता

है, तथा ग्रामीण परिवेष और बदलाव ला सकता है। अतः सरकार को षिक्षा, साक्षरता, क्षमता निर्माण प्रक्रियाओं पर जोर देना होगा।

4.3 ग्रामीण क्षेत्र के पूर्व उपभोग प्रवत्ति एवं वर्तमान उपभोग प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

4.1 उत्तरदाताओं की आयु संरचना

आयु वर्ग वर्षो में	पुरूष	महिला	कुल	प्रतिशत
0.15	123	108	231	31.60
15.30	125	115	240	32.83
30.45	72	68	140	19.16
45.60	47	43	90	12.31
60 से अधिक	21	9	30	4.10
कुल	388	34	731	100

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

तलिका क्रमांक 4.1 में सर्वेक्षित परिवारों की आयु सरंचना का विश्लेषण किया गया है। सर्वेक्षित परिवार में कुल 731 जनसंख्या है जिसमें 380 पुरूष एवं 351 महिलाएँ है। आयु वर्ग 0–15 में 24.35 प्रतिशत जनसंख्या है जिसकी कुल जनसंख्या 231 है। आयु वर्ग 15–30 में 32.83 प्रतिशत जनसंख्या है जिसकी कुल जनसंख्या 240 है जिसमें 125 पुरूष एवं 115 महिलाएँ है। आयु वर्ग 30–45 में 19.15 प्रतिशत जनसंख्या है जिसकी कुल जनसंख्या 140 है, जिसमें 72 पुरूष एवं 68

महिलाएँ है। आयु वर्ग 45–60 में 21.31 प्रतिशत जनसंख्या है जिसकी कुल जनसंख्या 90 है जिसमें 47 पुरूष एवं 43 महिलाएँ है। आयु वर्ग 60 से अधिक में 4.10 प्रतिशत जनसंख्या है जिसकी कुल जनसंख्या 30 है जिसमें 21 पुरूष एवं 9 महिलाएँ है

4.2 उत्तरदाताओं की भौक्षणिक स्थिति

शैक्षणिक स्थिति	पुरूष	महिला	कुल	प्रतिशत
अशिक्षित	68	110	178	24ण35
प्राथमिक	79	80	159	21ण75
माध्यमिक	88	85	173	23ण66
हाई	44	32	76	10ण39
उच्चतर माध्य.	43	31	74	10ण12
स्नातक/ स्नातकोत्तर	47	13	60	8ण20
अन्य	11	ऋ	11	1ण50
कुल	380	351	731	100

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

4.2 के विशलेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों की शैक्षणिक स्थिति कि विशलेषण किया गया है। जिसमें अशिक्षित कुल जनसंख्या का 24.35 प्रतिशत है , 68 पुरुष एवं 110 महिलाएं है। सर्वेक्षित परिवारों में सर्वाधिक शिक्षित माध्यिमक शिक्षाा की है, जो कुल जनसंख्या का 23.66 प्रतिशत है , प्राथमिक में 21.75 प्रतिशत , हाईस्कूल में 10.39 प्रतिशत , उच्चतर माध्यिमक मे10.12 प्रतिशत , स्नातक/ स्नातकोत्तर मे 8.20 प्रतिशत व अन्य शिक्षा जैसे इन्जीनियरिंग, आई टी आई में 1.प प्रतिशत है। तालिका से स्पष्ट होता है कि पुरुषों में शैक्षणिक स्तर अधिक है एवं महिलाओं में शैक्षणिक सतर है। जहां कुल जनसंख्या का 312प्रतिशत पुरुष एवं 241 महिलाएं शिक्षित है।

4.3 उत्तरदाताओं की आय का स्तर

आय वर्ग	आय का स्तर वार्षिक रूपये में	2002		2012	
		कुल	प्रतिषत	कुल	प्रतिषत
निम्न	1,00000 से कम	90	81ण82	78	70ण91
मध्यम	1 लाख से 3 लाख	20	18ण18	22	20ण00
उच्च	3 लाख से 5 लाख	दपस	छपस	9	8ण18
उच्चतम	5 लाख से अधिक	दपस	छपस	1	0ण91
	कुल	110	100	110	100

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

4.3 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है, कि सर्वेक्षित परिवारों में आय का स्तर 2002 में 100000 से कम 81.82 प्रतिशत परिवार आय थे जो घटकर 2012 में 70.91 प्रतिशत परिवार आय प्राप्त करते है। 2002 में 1 लाख से 3 लाख रू. वार्षिक आय 12.18 प्रतिशत परिवार आय प्राप्त करते थे जो बढ़कर 2012 में 20 प्रतिशत परिवार आय प्राप्त करते है। 2002 में 3 लाख से 5 लाख रू. वार्षिक

आय कोई भी परिवार प्राप्त नहीं करते थे जो बढ़कर 2012 में 8.18 प्रतिशत परिवार आय प्राप्त करते हैं। 2002 में 5 लाख से अधिक कोई भी परिवार वार्षिक आय प्राप्त नहीं करते थे जो बढ़कर 2012 में 0.91 प्रतिशत परिवार 5 लाख से अधिक वार्षिक आय प्राप्त करते हैं।

4.4 उत्तरदाताओं की खाद्य पदार्थ पर मासिक व्यय रूपये में

खाद्य पदार्थ पर मासिक व्यय	200 से कम		200 से 400		400 से 800		800 से अधिक		कुल परिवार		प्रतिषत	
	2002	2012	2002	2012	2002	2012	2002	2012	2002	2012	2002	2012
चावल	5	20	10	12	5	13	1	16	21	61	19ण09	55ण45
दाल	85	65	7	11	छपस	10	छपस	छपस	92	86	83ण64	78ण18
सब्जी	47	7	49	50	6	44	छपस	14	102	109	92ण73	99ण09
गेहूं	32	79	छपस	2	छपस	2	छपस	छपस	32	83	29ण09	75ण45
फल	1	4	2	6	1	2	छपस	1	4	13	3ण63	11ण82
चीनी	99	74	3	29	छपस	4	छपस	1	102	108	92ण73	98ण18
अण्डा	3	12	छपस	छपस	छपस	छपस	छपस	छपस	3	12	2ण73	10ण91
मांस	19	12	5	12	छपस	5	छपस	3	24	32	21ण82	29ण09

स्त्रोतः व्यक्तिगत स्त्रोत

4.4 के विशलेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों की खाद्य पदार्थ पर मासिक व्यय का विश्लेषण किया गया है। 2002 में 19.09 प्रतिशत परिवार चावल के उपभोग पर व्यय करते थे, जो बढकर में 55.45 प्रतिशत परिवार करते है। 2002 में 83.64 प्रतिशषत परिवार दाल के उपभोग पर व्यय करते थे , जो घटकर 2012 में 78.18 प्रतिशत परिवार दाल के उपभोग पर व्यय करते है। 2002 में 92.73 प्रतिशत परिवार सब्जी के उपभोग पर व्यय करते थे, जो बढकर 2012 में

99.09 प्रतिशत परिवार सब्जी के उपभोग पर व्यय करते है। 2002 में 29.09 प्रतिशत परिवार गेहूं के उपभोग पर व्यय करते थे जो बढकर 2012में 75.45 प्रतिशत परिवार गेहूं का उपभोग करते है। 2002में 3.63 प्रतिशत परिवार फल के उपभोग पर व्यय करते थे,जो बढकर 2012 में 11.82 प्रतिशत परिवार करते है। 2002 में 92.73 प्रतिशत हपरिवार करते थे, जो बढकर 2012 में98.18 प्रतिशत परिवार व्यय करते है। 2002 में 2.73प्रतिशत परिवार अण्डा केउपभोग पर व्यय करते थे,जो बढकर परिवार मांस के उपभोग पर व्यय करते थ, जो बढकर 2012 में 29.09 प्रतिशत परिवार मांस का उपभोग करते है

4.5 उत्तरदाताओं की वस्त्रों पर मासिक व्यय

वस्त्रो पर व्यय वार्षिक रूपये में	2002		2012	
	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत
5000 से कम	93	84ण56	45	40ण90
5000 से 10000	13	11ण82	47	42ण72
10000 से 20000	3	2ण72	16	14ण55
20000 से अधिक	1	0ण90	2	1ण81
कुल	110	100	110	100

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

तालिका 4.5 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों की वस्त्रों पर वार्षिक व्यय 2002 में 5000 रुपये से कम 84.54 प्रतिशत परिवार वस्त्र के उपभोग पर व्यय करते थे , जो

घटकर 2012 में 40.90 प्रतिशत परिवार वस्त्र के उपभोग पर करते करते है। 2002 में 5000 से 10000 रुपये वार्षिक व्यय 11.81 प्रतिशत परिवार वस्त्रों के पर व्यय करते थे, जो बढकर 2012 में 42.72 प्रतिशत परिवार वस्त्रों के उपभोग पर व्यय करते है। 2002 में 10,000 से 20,000 रुपये वार्षिक व्यय 2.72 प्रतिशत परिवार वस्त्रों के उपभोग पर व्यय करते थे, जो बढकर 2012 में 14.54 प्रतिशत परिवार वस्त्रों के उपभोग पर व्यय करते है। 2002में 20,000 रुपये से अधिक वार्षिक व्यय 090 प्रतिशत परिवार वस्त्रों के उपभोग पर व्यय करते थे, जो बढाकर 2012 में 1.81 प्रतिशत परिवार वस्त्रों के उपभोग पर व्यय करते है।

सर्वेक्षित परिवारों में वस्त्रों के उपभोग में वृध्दि का कारण यह है कि उनके आय में वृध्दि के साथ उनके फैशन में परिवर्तन हुआ है।

4.6 उत्तरदाताओ की मकान की स्थिति

मकान की स्थिति	कुल	प्रतिशत
कच्चा	72	65ण्46
पक्का	38	34ण्54
कुल	110	100

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

तलिका 4.6 के विशलेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों की मकान की स्थिति का विश्लेषण किया गया है। सर्वेक्षित परिवारों में 65.45 प्रतिशत मकान कच्चा है तथा 34.54 प्रतिशत मकान पक्का है।

4.7 उत्तरदाताओ की साबुन डिटर्जेन्ट पर मासिक व्यय

साबुन डिटर्जेन्ट पर मसिक रूपये में	2002		2012	
	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत
300 से कम 300 से 600 600 से 900 900 से अधिक	102 7 1 दपस	92ण्73 6ण्37 0ण्90 छपस	66 36 7 1	60ण्00 32ण्74 6ण्36 0ण्90
कुल	110	100	110	100

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

तालिका 4.7 के विलेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों में साबुन डिटजैन्ठ पर मासिक व्यय 2002 में 300 रू से कम 92.7 प्रतिशत परिवारों उपभोग पर व्यय करते थे, जो घटकर 2012 में 300 रू से कम 60 प्रतिषत परिवार करते है 2002 में 300 से 900 रू से अधिक साबुन डिर्टजैन्ट पर मासिक व्यय केवल 6.96 प्रतिषत परिवार करते थे जो बढ़कर 2012 में 300 से 900 रू से अधिक 40 प्रतिषत परिवार साबुन डिर्टजैन्ट पर व्यय करते है अर्थात् पिछले दस वर्षो की तुलना में उपभोग प्रवृत्ति में हुई है ।

4.6उत्तरदाताओ की मादक पदार्थे पर मासिक व्यय

मादक पदार्थो पर मासिक व्यय	2002		2012	
	कुल परिवार	प्रतिशत	कुल परिवार	प्रतिशत
500 से कम	31	28.18	58	52.73
500—1000	02	1.82	14	12.73
1000—2000	—	—	6	2.45
2000से अधिक	—	—	3	

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

तालिका 4.8 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों में मादक पदार्थो से संबंधित मासिक व्यय 500 रूपये ये से कम 2002 में 28.18 प्रतिशत परिवार मादक पदार्थो के उपभोग पर व्यय करते थे, जो बढ़कर 2012 में 52.73 प्रतिशत परिवार मादक पदार्थो के उपभोग पर व्यय करते

है। 2002 में 1.82 प्रतिशत परिवार 500–1000 रूपये मासिक मादक पदार्थो के उपभोग पर व्यय करते थे जो बढ़कर 2012 में 12.73 प्रतिशत परिवार मादक पदार्थो के उपभोग पर व्यय करते है। 2002 में कोई भी परिवार 1000 से 2000 रूपये एवं 2000 से अधिक व्यय मादक पदार्थो के उपभोग पर व्यय नहीं करते थे जो बढ़कर 2012 में 1000 से 2000 रूपये तक मादक पदार्थो के उपभोग पर व्यय 5.45 प्रतिशत परिवार करते है। 2012 में 2000 रूपये से अधिक मादक पदार्थो पर व्यय 2.73 प्रतिशत परिवार करते है। अर्थात् ग्रामीणों की पूर्व उपभोग प्रवृत्ति की तुलना में वर्तमान उपभोग प्रवृत्ति में मादक पदार्थो के उपभोग में वृद्धि हुई है।

तलिका 4.7 उत्तरदाताओं की जीवन के सहायक उपकरणों से संबधित उपभोग पर वार्शिक व्यय

जीवन के सहायक उपकरण पर व्यय	2002		2012	
	कुल परिवार	प्रतिशत	कुल परिवार	प्रतिशत
10000से कम	73	66.36	50	45.45
10000–50000	73	20.93	46	41.81
50000–200000	9	8.18	11	10.00
200000 से अधिक	3	2.73	5	4.55

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

तलिका 4.7 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों में जीवन स्तर के सहायक उपकरणों जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, शादी–विवाह एवं जन्म दिवस पर 10,000 रूपये वार्षिक से कम 2002 में 66.36 प्रतिशत परिवार उपभोग पर व्यय करते थे जो धटकर 2012 में 45.45 प्रतिशत परिवार जीवन स्तर के सहायक उपकरणों पर व्यय करते है। 2002 में 20.93 प्रतिशत परिवार 10,000 से 50,000 रूपये वार्षिक व्यय जीवन स्तर के सहायक उपकरणों पर करते थे जो बढ़कर 2012 में 41.81 प्रतिशत जीवन स्तर के सहायकण में उपकरणों पर करते है। 2002 में 50,000 रूपये से 2,00000 रूपये वार्षिक व्यय 8.18 प्रतिशत परिवार परिवार करते थे जो बढ़कर 2012 में 10 प्रतिशत परिवार जीवन स्तर के सहायक उपकरणों के उपभोग पर व्यय करते है 2002 में 2,00000 रूपये से वार्षिक व्यय 2.73 प्रतिशत परिवार जीवन स्तर के सहायक उपकरणों पर व्यय करते थे जो बढ़कर 2012 में 4.55 प्रतिशत परिवार जीवन स्तर के सहायक उपकरणों पर व्यय करते है।

4.9 उत्तरदाताओ की आवागमन के साधन

आवागमन के साधन	2002		2012	
	कुल परिवार	प्रतिषत	कुल परिवार	प्रतिषत
बैलगाड़ी	60	54ण54	16	14ण54
सायकल	79	71ण82	61	15ण45
मोटरसायकल	9	8ण18	41	37ण27
कार	छपस	छपस	छपस	छपस
अन्य	5	4ण54	11	10ण00

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

तलिका 4.9 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों में आवागमन के साधन के रूप में बैलगाडी का उपयोग 2002 में 55.54 प्रतिशत परिवार करते थे जो घटकर 2012 में 14.54 प्रतिशतपरिवार बैलगाडी का उपयोग करते है। 2002 में 71.82 प्रतिशत परिवार सायकल का उपयोगकरतेथे जो घटकर 2012 में 55.45 प्रतिशत परिवार करते है। क्योकि उनके आय वृध्दि के साथ उनकीरूचि आवागमन के आधुनिक एवं विलासिता की वस्तु की ओर ध्यान आकर्षित हुए है, इसलिए वर्तमान में सर्वेक्षित परिवारों में बैलगाडी एवं सायकल के उपभोग में कमी आयी है। 2002 में 8.18 प्रतिशत परिवार मोटर सायकल का उपयोग करते थे जो बढकर 2012 में 37.27 प्रतिशत परिवार मोटर सायकल का उपभोग करते है । 2002में कोई भी सर्वेक्षित परिवार कार का उपभोग नही करते थे और न ही 2012 में कोई परिवार कार का उपभोग करते है। 2002 में 4.54 प्रतिशत परिवार अन्य आवागमन के साधन जैसे ट्रेक्टर आदि का उपभोग करते थे जो बढकर 2012 में 10 प्रतिशत परिवार ट्रेक्टर आदि आवागमन के साधन का उपभोग करते है।

.

मनोरंजन के साधन	2002		2012	
	कुल परिवार	प्रतिषत	कुल परिवार	प्रतिषत

उत्तरदाताओं के मनोरंजन के साधन

रेडियो / एफ.एम टी.वी डी.वी.डी प्लेयर सिनेमा कम्प्यूटर अन्य	48 57 2 छपस छपस दपस	43.64 51.82 1.4 छपस छपस छपस	8 65 17 छपस 2 54	7ण्27 59ण्09 15ण्45 छपस 1ण्82 49ण्09

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

4.10 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं के मनोरंजन के साधन से संबधित उपभोग प्रवृत्त 2002 में 43.प64 प्रतिशत परिवार रेडियों / एफ. एम का उपभोग करते थे क्योकि सर्वेक्षित परिवारों में वर्तमान परिवेश में मनोरंजन के आधुनिक साधनों के प्रति रूचि में वृध्दि हुईहै इसलिए रेडियोंएफ एम के उपभोग में कमी हुई है। 2002 में 51.82 प्रतिशतपरिवार टी वी का उपभोग करते थे जो बढकर 2012 में 59.09 प्रातिशत परिवार करते है। 2002 में 1.64 प्रतिशत प्लेयर का उपभोग करते थे जो बढकर 2012 में 15.45 प्रतिशत परिवार डी वी डी प्लेयर का उपभोग करते है । 2002 में कोई भी परिवार सिनेमा पर व्यय नही करते थे और 2012 में भी कोई परिवार सिनेमा पर व्यय नही करते है। 2002 में कोई भी परिवार कम्प्यूटर के उपभोग नही करते थे जो 2012 में बढकर 1.82 प्रतिशत परिवार कम्प्यूटर का उपयोग करते है। 2002 में कोई भी परिवार मनोरंजन के अन्य साधन जैसे –टाटा स्काई , डी डी डारेक्ट प्लस , केबल उपयोगनही करते थे जो 2012 में बढकर 49.99 प्रतिशत परिवार अन्य मनोरंजन के साधनों का उपभोग करते है।

4.11 उत्तरदाताओ को अन्य वस्तुओं की उपभोग प्रवत्ति

उपभोग प्रवत्ति	2002		2012	
	कुल परिवार	प्रतिषत	कुल परिवार	प्रतिषत
अखबार मोबाईल षीतल पेय पदार्थ	3 छपस छपस	2n73 छपस छपस	6 97 छपस	5n46 88n18 दपस

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

तालिक क्रमांक 4.11 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों में 2002 में 2.73 प्रतिशत परिवार अखबार का उपभोग करते थे जो बढ़कर 2012 में 5.46 प्रतिशत परिवार अखबार का उपभोग करते है। 2002 में कोई भी परिवार मोबाईल एवं शीतल पेय पदार्थ का उपभोग पर व्यय नहीं करते थे जो बढ़कर 2012 में 88.18 प्रतिशत परिवार मोबाईल का उपभोग करते है। 2012 में भी कोई भी परिवार शीतल पेय पदार्थों पर व्यय नहीं करते हैं।

4.12 उत्तरदाताओ की विधुत उपकरणों से संबंधित वस्तुओं की उपभोग प्रवृत्ति

उपकरणों के नाम	2002	2012

	कुल परिवार	प्रतिषत	कुल परिवार	प्रतिशत
पंखे फ्रीज वाटर हीटर वाषिंग मषीन कूलर	47 3 छपस छपस 3	42ण्73 2ण्73 छपस दपस 2ण्73	83 8 छपस छपस 26	75ण्45 7ण्27 छपस छपसस 23ण्64

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

तालिका क्रमांक 4.12 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है, कि सर्वेक्षित परिवारों में विद्युत चलित उपकरणों का उपभोग 2002 में 42.73 प्रतिशत परिवार पंखे का उपभोग करते थे जो बढकर 2012 में 75.45 प्रतिशत परिवार पंखे का उपभोग करते है। 2002 में 2.73 प्रतिशत परिवार फ्रीज का उपयोग करते है। 2002 में कोई भी बाहर हीटर, वाशिंग मशीन का उपयोग करते है। 2002 में 2.73 प्रतिशत परिवार कूलर का उपभोग करते थे जो बढ़कर 2012 में 23.64 प्रतिशत करते है।

4.13 उत्तरदाताओ की ऊर्जा उपयोग पर मासिक व्यय

ऊर्जा उपयोग (मासिक व्यय रूपये में)	2002		2012	
	कुल	प्रतिषत	कुल	प्रतिषत
500 से कम	104	94ण54	68	61ण81
500 से 1000	1	0ण90	12	10ण90
1000 से 1500	2	2ण73	9	8ण18
1500 से 2000	1	0ण90	5	4ण54
2000 से 3000	1	0ण90	6	5ण45
3000 से अधिक	1	0ण90	10	9ण09
कुल	110	100	110	100

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

4.13 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों में ऊर्जा के उपयोग पर मासिक व्यय रूपये का विश्लेषण किया गया है । 2002 में 94.54 प्रतिशत परिवार 500 रूपये से कम व्यय करते थे जो घटकर 2012 में 61.81 प्रतिशत परिवार ऊर्जा के उपभोग पर व्यय करते थे जो बढकर 2012 में 5.45 प्रतिशत परिवार ऊर्जा के उपभोग पर व्यय करते है। 2002 में 0.90 प्रतिशत परिवार 3000रूपये से अधिके ऊर्जा के उपभोग पर व्यय करते थे जो बढकर 2012 में 9.09 प्रतिशत परिवार ऊर्जा के उपभोग पर व्यय करते है।विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि सर्वेक्षित परिवारों में ऊर्जा के साधन के रूप में सर्वाधिक केरोसीन का उपभोग किया जाता है। दूसरा सर्वाधिक ऊर्जा के साधन केरूप में बिजली का उपयोग किया जाता है। सर्वेक्षित परिवारों में ऊर्जा केलिए कोइ भी परिवार कोयला का उपयोग नही करते है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि जैसे ही उनकेऊर्जा उपयोग पर व्यय का स्तर बढ़ा है।

4.14 उत्तरदाताओ की अन्य घरेलु उपभोग वस्तुए

घरेलु उपभोग वस्तुएं	2002		2012	
	कुल परिवार	प्रतिषत	कुल परिवार	प्रतिषत

खाट	40	36ण36	32	29ण09
टेबल / कुर्सी	20	18ण18	41	37ण27
सोफा	3	2ण73	4	3ण64
पलंग	3	2ण73	7	6ण36
दीवान	4	3ण64	10	9ण09
डायनिंग टेबल	1	0ण90	3	2ण73
कुकर	6	5ण45	20	18ण18

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

तलिका 4.14 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों की घरेलू उपभोग वस्तुएं 2002 में 36.36 परिवार खाट का उपभोग करते थे जो बढ़कर 2012 में 29.09 प्रतिशत परिवार करते है। 2002 में 18.18 प्रतिशत परिवार टेबल / कुर्सी का उपभोग करते थे, जो बढ़कर 2012 में 37.27 प्रतिशत परिवार करते है। 2002 में 2.73 प्रतिशत परिवार सोफा का उपभोग करते थे, जो बढ़कर 2012 में 3.64 प्रतिशत परिवार सोफा का उपभोग करते है। 2002 मे 2.73 प्रतिशत परिवार पंलग का उपभोग करते थे, जो बढ़कर 2012 में 6.36 प्रतिशत परिवार पंलग का उपभोग करते है। 2002 में 3.64 प्रतिशत परिवार दिवान का उपभोग करते थे, जो बढ़कर 2012 में 9.09 प्रतिशत परिवार दिवान का उपभोग करते है, 2002 में 0.90 प्रतिशत परिवार डाइनिंग टेबल. का उपभोग करते थे, जो बढ़कर 2012 में 2.73 प्रतिशत परिवार डाइनिंग टेबल का उपभोग करते है। 2002 में 5.45 प्रतिशत परिवार कुकर का उपभोग करते थे, जो बढ़कर 2012 में 18.18 प्रतिशत परिवार कुकर का उपभोग करते है

.

अध्याय – 5

उपभोग प्रकृति को प्रभावित करने वाले कारक एवं बदलते उपभोग प्रवृत्ति का विष्लेषण किया जाएगा ।

सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र के उपयोग प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक –

तालिका 4.3 से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों खाद्य पदार्थ के उपभोग प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है । सर्वेक्षित क्षेत्र में चावल के उपभोग प्रवृत्ति में पिछले दस वर्षो की तुलना में कमी हुई है । दाल के उपभोग में वर्तमान स्थिति में पिछले दस वर्षो की तुलना में कमी हुई है । अन्य खाद्य पदार्थ सब्जी , गेहुं, फल, चीनी, अण्डा एवं मांस की उपभोग प्रवृत्ति में भी सन2002 की उपभोग प्रवृत्ति की तुलना में 2012 की उपभोग प्रवृत्ति में शीघ्र बहुत परिवर्तन हुए अर्थात् उपभोग प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है।

तालिका 4.4 के विष्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों के वस्त्र के उपभोग प्रवृत्ति में भी वृद्धि हुई है । सन् 2002 की उपभोग स्थिति में सर्वेक्षित परिवार पहले वस्त्रों के उपभोग पर 84.54 प्रतिषत परिवार 5000 से कम वस्त्रों पर व्यय करते थे लेकिन वर्तमान में घटकर 40.90 प्रतिषत परिवार वस्त्र के उपभोग पर व्यय कहते है अर्थात् हम यह कह सकते है कि पिछले दस वर्षो में सर्वेक्षित परिवार केवल 5000रू वस्त्र पर व्यय करती थी परंतु वर्तमान में उपभोग व्यय का स्तर 5000रू से 20000 से अधिक वस्त्रों पर व्यय करते है । अर्थात सन् 2002 में 5000 से 20000 से अधिक केवल 14.98 : परिवारवस्त्रों के उपभोग पर व्यय करते थे परंतु सन् 2012 की स्थिति में 5000 से 20000 से अधिक 59.25 प्रतिषत परिवार वस्त्रों के उपभोग पर व्यय करते है । अर्थात् वस्त्रों के उपभोग प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है

तालिका 4.7 के विलेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों में साबुन डिटजैन्ठ पर मासिक व्यय 2002 में 300 रू से कम 92.7 प्रतिशत परिवारों उपभोग पर व्यय करते थे, जो घटकर 2012 में 300 रू से कम 60 प्रतिषत परिवार करते है 2002 में 300 से 900 रू से अधिक साबुन डिर्टजैन्ट पर मासिक व्यय केवल 6.96 प्रतिषत परिवार करते थे जो बढ़कर 2012 में 300 से 900 रू से अधिक 40 प्रतिषत परिवार साबुन डिर्टजैन्ट पर व्यय करते है अर्थात् पिछले दस वर्षो की तुलना में उपभोग प्रवृत्ति में हुई है ।

तालिका 4.9 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों के आवागमन के साधन का उपभोग 2002 में 54.54 प्रतिशत परिवार बैल गाड़ी उपभोग करते थे जो घटकर 2012 में 14.54 प्रतिशत परिवार ही बैल गाड़ी का उपभोग करते है क्योकि अब सभी परिवार आवागमन के आधुनिक साधन का प्रयोग करना चाहते है । सन् 2002 में 71.82 प्रतिशत परिवार सायकल का उपभोग करते थे जाक घटकर 2012 में 55.45 प्रतिशत परिवार ही सायकल का उपभोग करते है । सर्वेक्षित परिवारों में कोई भी परिवार न ही 2002 में और न ही 2012 की स्थिति में कार का उपभोग करते है । मोटर सायकल एवं अन्य आवागमन के साधन जैसे ट्रेक्टर आदि का उपभोग सन् 2002 में 12.72 प्रतिशत परिवार करते थे जो

बढ़कर 2012 में 47.27 प्रतिशत परिवार मोटर सायकल में एवं अन्य साधनों का उपयोग करते है ।

तालिका 4.10 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों के मनोरंजन के साधन के रूप में 2002 में 43.64 प्रतिशत परिवार रेडियो । एफ. एम का उपभोग करते थे जो घटकर 2012 में 7.27 प्रतिशत परिवार रेडियों । एफ. एम का उपभोग करते है । 2002 में 53.46 प्रतिशत परिवार टी. वी., डी. वी. डी. प्लेयर का उपभोग करते थे जो बढ़कर 2012 में 74.54 प्रतिशत परिवार उपभोग करते है । 2002 में सर्वेक्षित परिवारों में सिनेमा , कम्प्यूटर एवं अन्य मनोंरंजन के साधनों का उपभोग नही होता था जो 2012 में कम्प्यूटर एवं अन्य मनोरंजन के साधनों का उपभोग नही होता था जो 2012 में कम्प्यूटर एवं अन्य मनोरंजन के सधानों का उपभोग नही होता था जो 2012 में कम्प्यूटर में अन्य मनोरंजन के साधन जैसे – डिस्क , टाटा स्फाई डी. डी. डायरेक्टर प्लस आदि का उपभोग 50.91 प्रतिषत परिवार उपभोग करते है । सन् 2012 में भी सर्वेक्षित परिवारों में से कोई भी परिवार सिनेमा पर व्यय नही करते है।

4.11 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों में मोबाईल का उपभोग 2002 में कोई भी परिवार उपभोग नही करते थे जो बढ़कर 2012 में 88.18 प्रतिशत परिवार मोबाईल का उपयोग नही करते है 2002 में 2.73 प्रतिशत परिवार अखबार का उपयोग करते थे जो बढ़कर 2012 में 5.46 प्रतिशत परिवार अखबार का उपभोग करते है शीतल पेय पदार्थ का उपभोग न ही 2002 में और नही 2012 में उपभोग करते थे । अर्थात पिछले दस वर्षो में देखा जाय तो वर्तमान में अखबार और मोबाइल के उपभोग में वृद्धि हुई है ।

4.12 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों के विद्युत उपकरणों से संबंधित उपभोग प्रवृत्ति थे पंखे का उपभोग 2002 में 42.73 प्रतिशत परिवार उपभोग करते थे जो बढ़कर 75.45 प्रतिशत परिवार उपभोग करते है । क्रीम का उपभोग 2002 में 2.73 प्रतिशत परिवार करते थे जो बढ़कर 2012 में 7.27 प्रतिशत परिवार उपभोग करते है । कूलर का उपभोग 2002 में 2.73 प्रतिशत परिवार उपभोग करते थे जो बढ़कर 2012 में 23.64 प्रतिशत परिवार कूलर का उपभोग करते है । वाटर हीटर वाषिंग मषीन का उपभोग न ही 2002 में कोई परिवार करते थे और न ही 2012 में वांषिग मषीन का उपयोग करते है । अधीर वांषिग मषीन और वाटर हीटर का उपयोग नही होता है परंतु कूलर पंखे एवं फ्रीज के उपभोग में वृद्धि हुई है ।

4.13 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों के ऊर्जा के उपयोग पर 500 रू से कम मासिक व्यय 94.54 प्रतिशत परिवार करते थे जो घटकर 2012 में 61.81 प्रतिशत परिवार ऊर्जा के साधनों पर जैसे – लकड़ी कोयला स्टोप , पेट्रोल , डीजल गैस आदि । सर्वेक्षित परिवारों में कोयला के उपभोग पर न तो 2002 और नही 2012 में कोयला के उपयोग पर व्यय नही करते है । सन् 2002 में 500 से 3000 रू से अधिक मासिक व्यय 8.

16 प्रतिशत परिवार ऊर्जा के साधन जैसे (लकड़ी स्टोव गैस पेट्रोल व डीजल) पर व्यय करते थे जो बढ़कर 2012 में 38.16 प्रतिशत परिवार ऊर्जा के साधनो पर 500 से 3000 से अधिक मासिक व्यय करते है । अर्थात् पिछले दस वर्षो की तुलना में वर्तमान में ऊर्जा के साधनों पर व्यय अधिक हो रही है क्योकि इन साधनों के उपभोग में वृद्धि हुई है ।

4.14 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित परिवारों में अन्य घरेलु उपभोग वस्तुएं जैसे खाद्य टेबल , कुर्सी , सोफा, पंलाग, दीवान, डायनिग टेबल प्रेषरकुकर आदि । सन् 2002 में 36.36 प्रतिशत परिवार खाट का उपभोग करते थे जो घटकर 2012 में 29.09 प्रतिशत परिवार खाट का उपयोग करते है अन्य घरेलु उपभोग वस्तुएं जैसे टेबल , कुर्सी , सोफ , पंलग , दीवान , डायनिंग टेबल एवं कुकर का उपयोग सन् 2002 में 33.63 प्रतिशत परिवार उपभोग करते थे जो बढ़कर 2012 में 77.27 प्रतिशत परिवार टेबल कुर्सी, सोफा पंलग दीवान डायनिंग टेबल, कुकर का उपयोग

अध्याय – 6

निष्कर्ष :–

संपूर्ण अध्यायों का अध्ययन करने के पश्चात् यही निष्कर्ष निकलता है कि मानव का उपभोग से गहरा संबंध है । निम्न आय वर्ग में उपभोग प्रवृत्ति ज्यादा है जबकि उच्च आय वर्ग में बचत ज्यादा होती है अतः मानव के जीवन सार में वृद्धि होने पर समाज की उन्नति होती है ।

सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र में उपभोग प्रवृत्ति ज्यादा है । निम्न और मध्यम आय वर्ग के परिवारों की संख्या अधिक है । इन आय वर्ग में खाद्य पदार्थो की खपत अधिक मात्रा में होता है । उच्च आय वर्ग और उच्चतम आय वर्ग में औद्योगिक उत्पादन और ऊर्जा उपभोग अधिक मात्रा में है जबकि निम्न और मध्यम आय वर्ग के परिवारों में इनका उपभोग कम देखा गया है । निम्न और मध्यम आय वर्ग में खाद्य पदार्थो में चावल का उपभोग प्रति व्यक्ति अधिक है अन्य खाद्य पदार्थ जैसे दाल , सब्जी, गेहूँ, फल, चीनी, अण्डा, मांस का उपभोग कम है । उच्च और उच्चतम आय वर्ग में चावल का उपभोग का उपभोग निम्न आय वर्ग से कम है । खाद्य पदार्थो का कूल उपभोग उच्च और उच्चतम आय वर्ग में निम्न और मध्यम आय वर्ग की तुलना में कम है ।

सवैक्षित ग्रामीण क्षेत्र में वस्त्र की वार्षिक उपभोग प्रवृत्ति में भी वृद्धि हुई है। आय से दस वर्ष पूर्व लोग केवल वस्त्र पर 5000 वार्षिक से कम व्यय करते थे लेकिन जैसे – जैसे उनकी आय में वृद्धि होती गयी वैसे ही लोगों की सोच पहनावा में भी वृद्धि होती गयी और वर्तमान में सवैक्षित परिवारों बहुत कम परिवार ही वस्त्र पर 5000 से कम खर्च करता है बल्कि वर्तमान में 5000 से 20000 से अधिक वस्त्रों पर व्यय करते है । इस प्रकार वस्त्र के उपभोग में वृद्धि हुई है ।

उपभोग में परिवर्तन 2002—2012 के इन दस वर्षो में परिवर्तन अवष्य हुआ है । खाद्य पदार्थो से संबंधित वस्तुओं में अधिक नही हुआ है । क्योकि मनुष्य अपनी क्षमता के अनुसार भोजन ग्रहण करता है । अतः खाद्य पदार्थ में एक सीमा तक ही परिवर्तन हुआ है । निम्न और मध्यम आय वर्गो में मनोंरजन के साधन के रूप में रेडियों । एफ एम एवं टी वी का अधिकार प्रर्षन में कमी आयी है क्योकि लोग मनोरंजन के आधुनिक साधन का प्रयोग करना चाहते है । जबकि उच्च और उच्चतम आय वर्ग में टी. वी. , डी. वी. डी. प्लेयर एवं कम्प्यूटर के उपभोग में वृद्धि हुई है । निम्न और मध्यम आय वर्ग एवं उच्च और उच्चतम आय वर्गों में सिनेमा पर व्यय नही किया जाता है क्योकि मनोरंजन के आधुनिक साधन के रूप में टी. वी. रेडियो एवं डी. वी. डी. प्लेयर का ही घटो में उपयोग कर लेते है । अतः इन दस वर्षो में मनोंरजन के साधनों के उपभोग कर लेते है । अतः इनद स वर्षो में मनोरंजन के साधनो के उपभोग में वृद्धि हुई है ।

सवैक्षित ग्रामीण क्षेत्र में आवा गमन के साधनों के उपभोग में भी इनद स वर्षो पूर्व आवागमन के साधन के रूप बैलगाड़ी का सर्वाधिक उपयोग होता था लेकिन वर्तमान में इनकी उपभोग में कमी आयी है । साथ ही सायकल मोटर सायकल एवं अन्य साधनों का उपयोग कम होना था लेकिन वर्तमान में प्रत्येक घर में लगभग सायकल है एव मोटर सायकल एवं अन्य साधन जैसे ट्रेक्टर के उपभोग में वृद्धि हुई है ।

सवैक्षित ग्रामीण क्षेत्र में मादक पदार्थो के उपभोग में भी वृद्धि हुई है । 2002 में तम्बाकू, बीड़ी, गुटखा, गुड़ाखू सिगरेट शाराब गाजा के उपभोग कम थी परंतु में वर्तमान में गुटखा, गुड़ाखु सिगरेट और शराब के उपभोग मे वृद्धि हुई है । तम्बाकू, बीड़ी, गांजा के उपभोग में भी वृद्धि हुई है ।

मोबाइल पंखे का उपभोग आजकल सभी परिवारों में सामान्य रूप से किया जाता है परंतु फ्रीज कूलर का प्रयोग उच्च और उच्चतम आय वर्ग में अधिक मात्रा में होती है । वाषिंग मषीन एवं वाटर हीटर का उपयोग नही निम्न और मध्यम आय वर्ग में होता है और कही उच्च और उच्चतम आय वर्ग में होता है । अखबार के उपभोग में भी वृद्धि हुई है निम्न और मध्यम आय वर्ग में अधिकतर ऊर्जा के साधन के रूप में लकड़ी, मिट्टी का तेल ही उपयोग करते है जबकि उच्च और उच्चतम आय वर्ग में पेट्रोल, गैस, डीजल के उपभोग में वृद्धि हुई है । कोयला का उपभोग दोनों आय वर्गो में नही किया जाता है ।

अन्य घरेलू उपभोग वस्तुओं के रूप में जैसे खाद टेबल । कुर्सी सोफा, पंलग दीवान डायनिंग टेबल कुकरके उपभोग में भी पिछले दस वर्षो की तुलना में इनकी वर्तमान उपभोग में वृद्धि हुई है।

अतः स्पष्ट है कि सवैक्षित ग्रामीण क्षेत्र में पिछले दस वर्षो की तुलना में वर्तमान उपभोग प्रविृति में हुआ है । खाद्य पदार्थो के रूप में चावल, दाल, सब्जी, गेहूं फल, दूध चीनी अण्डा, मांस आदि के उपभोग में कम परिवर्तन हुआ है जबकि औद्योगिक वस्तुओं एवं ऊर्जा के उपभोग में बहुत अधिक परिव

<u>समस्या</u>

सम्पूर्ण अध्यायों के अध्ययन से सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र में अनेक प्रकार के समस्याओ का पता चलता है। जब ग्रामीण क्षेत्र में लोगों की उपभोग प्रवृत्ति का अध्ययन किया तो निम्नाकिंत समस्याये सामने आयी है, जिनमें से अधिकांष समस्याएं खाद्य पदार्थो के उपयोग स्तर एवं अखाद्य पदार्थो एवं उर्जा के उपयोग में भी समस्याएं है।

सर्वेक्षित ग्राम रसौहा में अषिक्षा व्यवस्थित यातायात, नालियों, सड़को का अभाव है। जनसंख्या में वृद्धि होने से खाद्य पदार्थो की कमी होने लगी है जिससे इन खाद्य पदार्थो की कीमतों में वृद्धि हुई है। यही कारण है, कि आज भारत में मंहगाई चर्चित मुद्दा बन गई है। जिसका प्रभाव न केवल गरीब वर्ग पर पड़ता है बल्कि इसका प्रभाव मध्यम एवं उच्च आय वर्ग के लोगों को भी प्रभावित करता है। किंतु इस मंहगाई का मार सबसे अधिक गरीब लोगो पर पड़ता है। अखाद्य पदार्थो में ही टी.वी का अधिक प्रयोग किया जा रहा है जिनसे आंखे खराब हो सकती है साथ ही आम सभी परिवारों में मोबाईल की उपभोग में वृद्धि हुई है जिसके कारण उनसे निकलने वाली खतरनाक किरणो से कैंसर की बीमारी होने की समस्या बनी रहती है। टेपरिकार्डर के षोर से वायु प्रदुषण, ध्वनि प्रदुषण होता है। अतः हम कह सकते है कि अखाद्य पदार्थो जैसे– टी.वी., मनोरंजन के साधन, विधुत उपकरणो आदि के उपभोग में वृद्धि हुई है, जिसके कारण मंहगाई में वृद्धि हुई है।

सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र में ईंधन के रूप में लकड़ी का उपयोग अधिक मात्रा में किया जाता है, जिसके कारण पेड़–पौधो, वनस्पतियों के घरेलू ईंधन के लिए कटाई की जाती है, जिसके कारण प्राकृतिक असन्तुलन में वृद्धि होती है। सर्वेक्षित ग्राम रसौहा में आवागमन के आधुनिक साधनों के उपभोग में वृद्धि हुई है जैसे मोटरसायकल, ट्रेक्टर, म्यूजिक आदि साधनो के उपभोग में वृद्धि हुई है जिसके कारण ऊर्जा के समाप्यषील साधन पेट्रोल, डीजल, मिट्टी का तेल, गैस आदि के उपभोग में वृद्धि हुई है, जिनसे इनके मूल्य में भी वृद्धि हुई है। साथ ही बिजली की कटौती में वृद्धि हुई है।

सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र में ऊर्जा संकट एक नवीन और जटिल समस्या के रूप में उभरकर सामने आयी है। आज यहां लगभग 75 प्रतिषत परिवार ऊर्जा के परम्परागत साधनों का अविवेकपूर्ण

ढंग से उपयोग करना अषिक्षा, गांव से जंगल की दूरी, निम्न आय स्तर आदि ऊर्जा संकट का प्रमुख कारण है।

सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र में यह भी समस्या देखा गया कि सर्वेक्षित ग्राम में षहरीकरणआधुनिकता एवं वैष्वीकरण के प्रभाव में वृद्धि हुई जिससे इनके मनोवृत्ति में भी परिवर्तन हुए है जिससे वस्तुओं के उपभोग में वृद्धि हुई है साथ ही महिलाओं में सौन्दर्य प्रसाधन के उपभोग में वृद्धि हुई है, जिससे इनके मूल्य में भी वृद्धि हुई है।

सुझाव

इन समस्त समस्याओं की मूल में जनसंख्या में हो रही वृद्धि है। अतः सर्वप्रथम जनसंख्या में हो रही वृद्धि को रोका जाये। खाद्य एवं अखाद्य पदार्थो का संतुलित उपयोग किया जाये। ऊर्जा के साधनों का अपव्यय न किया जाय। सरकार को भी यह चाहिए की मंहगाई में हो रही वृद्धि को नियंत्रित किया जाये तथा साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए उचित षिक्षा स्वास्थय, सड़क, यातायात के साधन, मनोरंजन के साधनों का विकास करना चाहिए जिससे उनकी आय में वृद्धि एवं जीवन सार में वृद्धि और समाज का विकास हो।

ग्रामीणों के रोजगार के अवसर में वृद्धि करने के लिए ड।छत्म्ळ।। जैसे रोजगार कार्यक्रमों की संख्या में वृद्धि करनी चाहिए।

चूंकि सर्वेक्षित ग्रामीण क्षेत्र में ऊर्जा संकट से ग्रस्त है, इस समस्या के निदान हेतु यहां ऊर्जा के वैक्ल्पिक स्त्रोतों का विकास करना अतिआवष्यक है। इसके लिए गांव की खाली पड़ी भूमि पर वृक्षारोपण कर लकड़ी की बढ़ती मांग को कुछ हद तक कम किया जा सकता है। सौर ऊर्जा के बारे में लोगों को जानकारी देकर ईधन के लिए नवपरम्परागत ऊर्जा के बारे में लोगो को बतलाकर ईधन के लिए परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों पर निर्भरता में कभी लाई जा सकती है। गोबर अधिक होने के कारण यहां गोबर गैस का प्रयोग किया जा सकता है। वर्तमान संकट में ऊर्जा संकट को देखते हुए भारत सरकार द्वारा ऊर्जा नीति लागू किया गया है तथा ग्रामीणों को इनकी सुविधा प्रदान किया गया है।

सर्वेक्षित गॉव के लिए वर्तमान ऊर्जा नीतिः–

सर्वेक्षित गॉवो के ऊर्जा संबंधी विषेषताओं एवं समस्याओं को देखते हुए इन गांवो के लिए वर्तमान ऊर्जा नीति इस प्रकार है–

1. घरेलु ऊर्जा की आवष्यकता को पूरा करने के लिए ऊर्जा के नवकरणीय साधनों का विकास करना।
2. ऊर्जा प्रबंध तथा संरक्षण करना।
3. गॉवों में विद्यमान क्षमता का आदर्षतम उपभोग करना।
4. ग्रामीणों के जलाऊ लकड़ी की मांग में कमी किया जाये ताकि वनो पर दबात कम किया जा सके।
5. ऊर्जा आपूर्ति में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।
6. प्रकाष के लिए बिजली का उचित प्रबंध करना।
7. कम से कम लागत पर ग्रामीणों को ऊर्जा की पर्याप्त पूत्रि करना
8. तेल तथा ऊर्जा के अन्य किस्मों की मांग कर प्रबंध करना।
9. ऊर्जा संसाधनों के अविवेकपूर्ण प्रयोग के बुरे प्रभावों से पर्यावरण को बचाना।
10. ऊर्जा के संबंध में ग्रामीणों को नवीनतम जानकारी उपलब्ध कराना।
11. इन ग्रामों के लिए अनुकुल ऊर्जा नीति का विकास किया जाना चाहिए।

बढ़ती हुई जनसंख्या वृद्धि के कारण खाद्य एवं अखाद्य पदार्थो की मांग में वृद्धि होने से इन वस्तुओं की मंहगाई में वृद्धि हुई इसका प्रमुख कारण यह है विज्ञापन का प्रचार–प्रसार, प्रदर्षन प्रभाव, षहरीकरण का प्रभाव, अषिक्षा आदि के कारण वस्तुओं के उपभोग में वृद्धि हुई है जिनसे वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हुई है। जिन वस्तुओं की कीमतो में उछाल है, उनकी आपूर्ति बढ़ाकर कीमतों को कम किया जा सकता है। देष में अभाव वाली वस्तुओं का आयात किया जा सकता है। वस्तुओं की काला बाजारी को रोककर मंहगाई को काबु किया जा सकता है। इसके अलावा सार्वजनिक वितरण प्रणाली को मजबूत किया जाना चाहिए। दोहरी मूल्य प्रणाली भी मंहगाई को रोकने में सहायक होती है। सरकार प्रषासित कीमतों को नहीं बढ़ा

संदर्भ सूची

1. प्लानिंग कमीशन – फर्स्ट फाइव प्लान 1951:, पृष्ठ 442
2. पुण्डेदेव ओझाा :– लघु और वृहद उद्योगों का विकास , नेशनल बैंक न्यूज रिव्हीव – बाम्बे पृष्ठ25–30
3. मिश्रा ओ.पी. के.एस. सहाय, यू.के. पाण्डे ''ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों के माध्यम से आय और रोजगार का सृजन पर साख का प्रभाव खादी ग्रामोद्योग, बाम्बे पृष्ठ 158
4. ठींहूंद कौंए ठ तंककलएश्पदकनेजतपंसप्रंजपवद – पउचसवलउमदज पद पदकपंश ए लवरदंए उंतबी 1998 चह दव.9
5. गुप्ता, देवेन्द्र बी., ''घरेलु क्षेत्र की आय और उपभोग'', भाग 17, संख्या 6, 1970, पृ. 707–716.
6. मजुमदार शैली 1999 ''रायपुर जिले में ग्रामीण क्षेत्र का उपभोग प्रतिरूप'' लघु शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि., रायपुर (छ.ग.)
7. पटेल कुमार सुधीश, ''पंचायती राज में रोजगार की बदलती स्वरूप'' कुरूक्षेत्र, जून 2011, वर्ष 57, अंक 8, पृ.क्र. 15–19
8. गाँधी हेमा (2009), ''हस्तशिल्प कला से रोजगार'' कुरूक्षेत्र, जुलाई 2009 वर्ष 55, अंक 9, पृ.क्र. 3–6
9. जैन कविता डॉ., ''ग्रामीण महिलाओं हेतु कुटीर उद्योग'' कुरूक्षेत्र, सितम्बर 2010, वर्ष 56, अंक 11 पृ.क्र. 32–36
10. यादव संगीता, ''ग्रामीण भारत की बदलती तस्वीर'' कुरूक्षेत्र, अगस्त 2010, वर्ष 56, अंक 10, पृ.क्र. 24–27
11. सिंह कुमार संतोष, ''स्वास्थ्य सूचना और रोजगार से ग्रामीण विकास'' कुरूक्षेत्र, जनवरी 2010, वर्ष 56, अंक 12, पृ.क्र. 18–22

12. श्रीवास्तव निशा, ''विज्ञापन का उपभोक्ता पर प्रभाव एवं उपभोक्ताओं की वैद्यानिक स्थिति एक अध्यय'' त्मेमंतबी ृवदमए अवस 3ए छवण 3, श्रनदम 2011
13. श्रीवास्तव राजेश, ''ग्रामीण विकास में ग्रामीण विकास कार्यक्रम एवं ग्रामीण विकास बैंको के योगदान का सर्वेक्षणात्मक मूल्यांकन'' (छ.ग. राज्य के सरगुजा जिले के विशेष संदर्भ में) त्मेमंतबी श्रवदमए अवसण 3ए छवण 3ए श्रनदम 2011
14. यादव सावित्री, ''किसान क्रेडिट कार्ड से खत्म हुई किसानों की ऋण समस्या कुरूक्षेत्र, जून 2011, वर्ष 57, अंक 8 पृ.क्र. 3–9
15. शर्मा कुमार विजय, ''गाँवों में समृद्धि की राह दिखाता सूचना प्रौद्योगिकी ऋण'' कुरूक्षेत्र, जून 2011, वर्ष 57, अंक 8, पृ.क्र. 15–19
16. यादव शंभूनाथ ''खेती एवं किसानों का हितैषी बजट'' कुरूक्षेत्र, अप्रैल 2011, वर्ष 57, अंक 06, पृ.क्र. 20–25
17. रंजन नवनीत, ''गाँवों में शहरों जैसी सुविधाओं का विस्तार'' कुरूक्षेत्र अक्टूबर 2011, कुरूक्षेत्र वर्ष 57 अंक 12 पृ.क्र. 20–25
18. उंजप चतंकपच ंदक त्व त्ण झंअपजंए श्क्मउंदक ेपकम बिजवत ंदक प्दकपें प्दकनेजतपंस ळतवूजीश्ए म्बवदवउपबे ंदक च्वसपजपबंस ॅममासल ।नह19ए1995ए च्हण छव 2070 जव 2071
19. ैतपदपअेी चण्टण दृ श म्गबमे बंचंबपजपमे प्द प्दकपं प्दकनेजतपंसश ेनचचसल वत क्मउंदक कमजमतउपदकए म्बवदवउपबे ंदक चवसपजपबंस ॅममासलए छवअ7ए 1992 च्ण्हण छव 2437
20. त्वए श्रण डवींदए श प्दकपें वि प्दकनेजतपंस च्तवकनब ज्पनपजल ळतवूजीश क्मेंतमेंजपवद –प्दजमतचतमजंजपवद म्बवदवउपबे ंदक चवसपजपबंस ॅममासलए क्मब 7ए 1996ए च्हम छ0 3177
21. ब्ंदकतांत ब्ण्टण श म्गसंपदपदह चवेजए त्मतिवउ प्दकनेजतपंस ळतवूजीश म्बवदवउपबे ंदक चवसपजपबंस ॅममासलए छवअै.मचजए1968ए च्ह.छव 2537
22. सिंह विधासागर , '' वाराणसी जिले में लघु उधागों का विकास एवं सामाजिक विवेचन खादी ग्रामों उधोग , बाम्बे , 1988, पृष्ठ संख्या– 337
23. चन्द्राकर रश्मि, ''रायपुर जिले में ग्रामीण ऊर्जा उपभोग प्रतिरूप एक भौगोलिक अध्ययन'' भूगोल अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छ.ग., वर्ष 1996–97

24. पाल डौली, ''रायपुर नगर का उपभोग प्रतिरूप'' कोटा वार्ड का प्रतिकात्मक अध्ययन, भूगोल अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छ.ग., वर्ष 1998–99

25. मित्रा, के.पी. 2004 '' डेवलपमेंट प्रोग्राम एण्ड ट्राइबल्स सम एमर्जिन इसूज'' कल्पात्र पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

26. आजाद श्री, '' मानवीय उपभोग से पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन समाप्त हो रहे है'' वर्ष 40, अंक 3, अक्टुब्र–सित्मबर 2011

28. जगदीश ए, ''भारत में पवन ऊर्जा के उपयोग की कार्यनीति बनाना'' अक्षय ऊर्जा ए वर्ष 6, अंक 2 अक्टुबर 2012

29. गुप्ता, एच. एस., ''ऊर्जा उत्पादन की क्षेत्रीय प्रवृति और विश्व में उपभोग'', भू–विज्ञान, भाग 1, संख्या 1, जनवरी 1986, पृ. 17–27.

30. गुप्ता, एस. पी., ''सांख्यिकीय विधियां'', सुल्तान चन्द सन्स, नई दिल्ली, 1985.

31. हेरन्दी, ए., ''उपभोग और जापान में उपभोग'', जापान श्रम प्लस शिक्षा, 1988, पृ. 1–4.

32. हैरीश, दनाल. एस., ''जमाइका मै घरेलू क्षेत्र के उपभोग का इक्नो मे द्विवस विश्लेषण सामाजिक और अर्थशास्त्र अध्ययन 1964, पृ. 471–487.

33. कपूर, टी. एन., ''भारत में राज्यों में औद्योगिक विकास'', दिल्ली प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड ,1967.

34. मेहता. बी. सी., ''राजस्थान में उपभोग प्रवृत्ति का विश्लेषण'', अर्थशास्त्र विकास की पत्रिका, जनवरी–जून 1979.

35. शर्मा एवं सोनी, ''कृषि अर्थव्यवस्था'', प्रतिभा प्रकाशन, 1987.

36. जिममैन इरीच डबलू, ''विश्व संसाधन और औद्योगिक'', 1951.

37. बाजपेयी, एस. आर., ''सामाजिक सर्वेक्षण की विधियां और अनुसंधान'', कानपुर किताब घर, आचार्य नगर कानपुर, 1966.

38. फेसमेन, एम., ''चेकोस्लाविया में निजी उपभोग'', इक्नोमिकी कास्पग्रिस, पृ. 227–242.

39. लिंगर, एन. एस. और एल. आर. जैन, ''भारत के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र मे उपभोग की प्रक्रिया'', अर्थशास्त्र और सप्ताहिक राजनीति, नम्बर 1969, पृ. 129–144.

40. गोपाल, एम. एच., ''सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान एक परिचय'', मू बाम्बे आइसाश प्रकाशन घर, 1970.

41. छ.ग. बेसिन भारत क्षेत्रीय अध्ययन वाराणसी 1971

42. ''इन्ड्रस्ट्रिलाइजेशन एण्ड इम्पलायमेन्ट इन इंडिया इकोनामिक्स'' मार्च 1998 पृ. क्र. 9

43. फार्स्ट फाइव ईयर प्लान 1951, पृ. क्र. 442

44. ''इन्कम एण्ड स्ट्रक्चर ऑफ मैन्यू फैक्चरिंग इन्डस्ट्री'' 1960–61 (ए स्टेट वाईस एनालिसिस) नई दिल्ली एन.सी.ए.ई.आर 1970 पृ. क्र. 92

45. गुप्ता, ऋतम्भरा, 2002, रायपुर जिले में ग्रामीण घरेलू ऊर्जा उपयोग प्रतिरूप'' लघु शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि., रायपुर (छ.ग.)

46. डवदप `नदपसए श जीम प्दकनेजतपंस `मबजवतश ग्बवदवउपबे ंदक चवसपजपबंस ॅममासलए छवअ7ए1995ए चंहम छव 39

47. ज्ञनउंतए क्ण `नतमी ंदक त्ंर्रुंउप ब्ण श्उवकमसपदह भ्वनेमींसक ग्बवदवउल वि ।हतववितमेजतबल ठेंमक त्मेवनतबमे चववत थ्ंतउमतेश । बेंम वि`पसअप चवेजवतंक`मेजमउ प्दकपंद श्रवनदमस वि ।हतपबनसजनतम ग्बवदवउपबे ब्जण.क्मबण 2003ण टवसण ;55द्ध4 क्क 669.694

48. झिंगन एम.एल, 1997 ''समष्टि अर्थशास्त्र'' सप्तम संस्करण, पृष्ठ संख्या 96–123.

49. जैन भागचन्द्र '' विश्व व्यापार संगठन और भारतीय किसान'' नवभारत 30 मार्च 2003

50. जैन भागचन्द्र, '' विश्व व्यापार संगठन और कृषि, ए जनरल ऑफ एशिया फार डेमोक्रेसी एण्ड डेवलपमेंट, 2003, पृष्ठ संख्या 140–143

51. शर्मा देवेन्द्र, ''विश्व व्यापार संगठन से भारतीय किसानों का अहित युग अभियान'' रिपोर्टर 2001, 2 (41–42) : 7

52. श्रीवास्वत आशीष, कृषि क्षेत्र में निर्यात उद्यमता समाचार पत्र 2002, 11, (8) : 29–30

53. योजना, मुद्रा स्फिति विशेषांक अगस्त, 2010

54. मिश्रा, पुरी एवं दत्त सुन्दरम, भारतीय अर्थव्यवस्था 2010

55. बिजनेस भास्कर, नवम्बर 2011

56. शर्मा करूणा, ''पारिवारिक बिल एवं उपभोक्त शिक्षा'' ,तमेमंतबी॰वदमए अवसे छवण 3 श्रनदम 2011